thearyasamaj.org

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास–आषाढ़–श्रावण, संवत् 2071
जुलाई 2014

ओ३म्

अंक 108 मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

शहीदों का सरताज
चन्द्रशेखर आजाद
जयन्ती 23 जुलाई

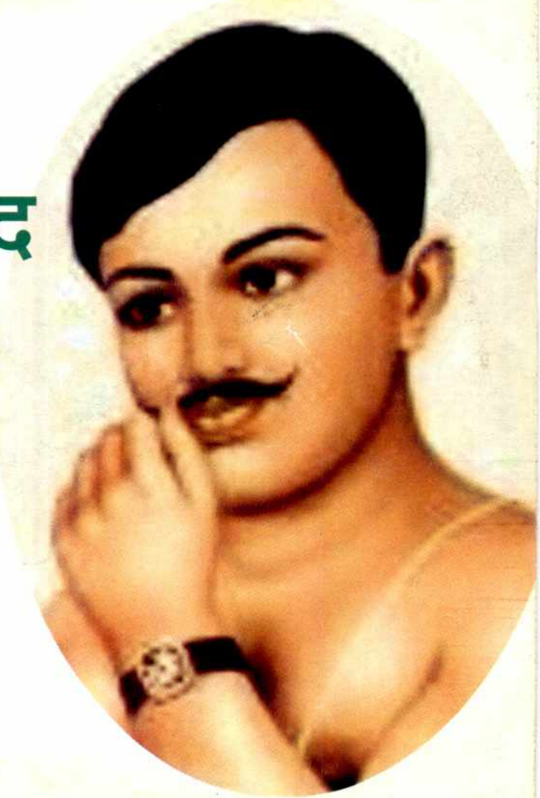

माँ भारती का सच्चा सपूत
बालगंगाधर तिलक
जयन्ती 23 जुलाई

thearyasamaj.org

ओ३म्

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

स्व. श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव

म.प्र. व विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के यशस्वी उपप्रधान श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव के असामयिक महाप्रयाण पर शोक संतप्त परिजनों को सांत्वना प्रदान के साथ-साथ छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है .

thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७१
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द – १९१

वर्ष – १०, अंक १ | ओ३म् | मास/सन् –जुलाई २०१४

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरू पतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३००८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

विषय – सूची

पृष्ठ क्र.

१.	वेदामृत : दैव्य जन प्राप्त कराओ	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आखिर कैसे समाप्त हो दहेज का अभिशाप	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	हम अच्छे होंगे तो आएंगे अच्छे दिन	श्री चेतन भगत	०८
४.	जल और वायु की शुद्धि की आवश्यकता	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१०
५.	श्रेष्ठ जीवन के सूत्र	श्री कमलेश नेहरा	१२
६.	महर्षि का वेद–भाष्य : तर्क व विज्ञान पर आधारित है.	श्री खुशहालचन्द्र आर्य	१३
७.	महर्षि दयानन्द सरस्वती : एक जीवन पथ	श्रीमती किरण खोसला	१५
८.	मानव धर्म	श्री रमणदास महाणा	१७
९.	महाप्रयाण : छ.ग. के आर्य नेता श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव : एक परिचय		२०
१०.	सबका मालिक एक : बनाम शंकराचार्य का बयान	डॉ. अजय आर्य	२२
११.	माँ भारती का सच्चा सपूत : बालगंगाधर तिलक	आचार्य भगवानदेव चैतन्य	२६
१२.	शहीदों का सरताज : चन्द्रशेखर आजाद	पं. लोचन शास्त्री	२८
१३.	ईश्वर की शिकायत	सौजन्य : दिलीप आर्य	२९
१४.	होमियोपैथी से मूत्र ग्रन्थियों (किडनी) से उत्पन्न रोगों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१५.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का परिवर्त्तित अणुसंकेत (ई-मेल) **E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com**

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

वेद वेदामृत

दैव्य जन प्राप्त कराओ

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

त्वं दूतो अमर्त्यः, आ वहा दैव्यं जनम् ।
श्रृण्वन् विप्रस्य सुष्टुतिम् ॥ ऋग्. ६.१६.६

ऋषिः **बार्हस्पत्यः भरद्वाजः** । देवता **अग्निः** । छन्दः **वर्धमाना गायत्री** ।

● (हे अग्ने ! हे परमात्मन् !) **(विप्रस्य)** (मुझ) विप्र की **(सुष्टुति)** शुभ स्तुति को **(श्रृण्वन्)** सुनता हुआ **(दूतः)** दूत, **(अमर्त्य)** अमर **(त्वं)** तू **(दैव्यं)** दैव्य **(जनं)** जन को **(आ वह)** प्राप्त करा ।

● आज यह धरती किसी दैव्यजन की प्रतीक्षा कर रही है। भूतल पर अदिव्यता ऐसी व्याप गई है कि उसने मानव को असुर बना दिया है। चारों ओर विध्वंस-लीला है, चारों ओर हाहाकार है, चारों ओर पाप का साम्राज्य है, चारों ओर पशुता का तांडव है, चारों ओर अनाचार है, चारों ओर भीति और वैक्लव्य है, चारों ओर अधर्म का बोलबाला है, चारों ओर निरीहों का कातर स्वर है, चारों ओर असत्य का समर्थन है, चारों ओर चोरी, डाके और हत्या की सनसनी है, चारों ओर अविद्या और तामसिकता की घोर निशा है, चारों ओर राग-द्वेष की विकलता है। इस भीषण बर्बरता और कराहट के बीच कहीं से एक आवाज उठ रही है कि हे प्रभु ! इस विकराल समय में किसी दैव्य जन को उत्पन्न करो, जो तामसिकता और अदिव्यता के अभेद्य दुर्ग को चीरकर सर्वत्र दिव्यता का संचार कर सके। हे अमर प्रभु ! तुम जगती-तल पर मृत चेतना का उद्भेदन कर अमर चेतना का प्रादुर्भाव कर दो। हे परमेश ! तुम देवदूत बनकर इस मृत-प्राय भूमण्डल पर दैव्य जन का अवतरण कर दो।

देखो ! विप्र जन करबद्ध हो तुम्हारी स्तुति कर रहे हैं, बड़ी आशाएं लगाकर तुमसे दैव्यजन को जन्म देने का चमत्कार करने की प्रार्थना कर रहे हैं, अपनी सम्पूर्ण अभीप्सा के साथ भूतल पर दैव्य जन के उदय की बाट जोह रहे हैं। उनकी स्तुति सु-स्तुति है, हृदय से निकली हुई पुकार है। हे देवेश ! उस पुकार को सुनो और दैव्यजन को उत्पन्न करो, जो अदिव्यता की व्याधि से कराह रहे जगत् में दिव्यता का संचार करे, अधर्म के स्थान पर धर्म को सम्मानित करे, पाशविकता के स्थान पर आध्यात्मिकता को शरण दे, अशान्ति के स्थान पर शान्ति का साम्राज्य स्थापित करे और पीड़ा एवं चीत्कार को हटाकर दिव्य आनन्द एवं अभीति को पनपा सके। हे दिव्यता के अधिपति ! तुम बस, उस दैव्य जन को उत्पन्न मात्र कर दो। आगे उसे सम्मानित करना, हृदय-हार बनाना, राज सिंहासन पर बैठाना हमारा काम है। हम उसकी चरण-रज को मस्तक पर लगायेंगे, उसे दिव्यता का सूत्रधार बनायेंगे और उसके आदेश का पालन करते हुए स्वयं भी दिव्यता के प्रसार में सहयोग अर्पितकरेंगे।

संस्कृतार्थ :- १. देवेषु दिव्येषु कर्मसु साधुः दैव्यः तम् (देव, यञ प्रत्यय)। यद् वा देवेषु विद्वत्सु कुशलं दैव्यम्।

thearyasamaj.org

आखिर कैसे समाप्त हो दहेज का अभिशाप

भारतीय समाज में आज की दहेज प्रथा बेईमान का ही एक रुप है तथा लाखों परिवारों के दुःखों और विनाश का कारण बनी हुई है। इस महंगाई और अभाव के युग मेंलोगों के प्रतिदिन के खर्चे तो पूरे होते नहीं, वे फिर लड़की को पालने-पोसने तथा पढ़ाने-लिखाने के बाद बड़ी-बड़ी बारातों की आवभगत, सजावट एवं विविध मांगे कहाँ से पूरी करें? इस पर आये दिन लेन-देन की बढ़ती हुई प्रथायें, अब रोक है, अब ठाका है, आज सगाई है, आज सगई चुन्नी चढ़ाने के लिए ढेर सारी स्त्रियाँ आई है, कैसे निभाई जाएँ ? चाहिए तो यह कि लड़के वाला लड़की वाले के उपकार को स्वीकार करें, क्योंकि वह पाल-पोस कर अपने परिवार के एक योग्य सदस्य को दूसरे परिवार की समृद्धि के लिए सर्वात्मना समर्पित करता है। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि कृतघ्नता की प्रवृत्ति किस प्रकार बढ़ रही है कि उलटा लरकी वाले पर अहसान जताया जाता है। इस कुप्रथा का ही परिणाम है कि आज भारतीय परिवारों में हजारों युवतियाँ दहेज न दे सकने के कारण अपनी जवानियाँ गला रही है, और आए दिन कोई न कोई जिस किसी प्रकार से दहेज प्रथा की बलि-वेदी पर भेंट हो जाती है। इसीलिए ही हमारे काले कारनामें काले-काले अक्षरों में प्रति सप्ताह दैनिक पत्रों में आते रहते हैं। आश्चर्य तो यह कि हम दहेज लेने के कुत्सित ढंग को वर्तते हुए भी उसी मुख एवं हृदय सें भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिकता के गीत गाते नहीं थकते। दहेज के परिणामों को देख कर ही यह कहने के लिए विवश होना पड़ता है कि दहेज एक अभिशाप है।

विवाह वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का अनिवार्य अंग है, क्योंकि अन्य इच्छाओं की तरह युवा अवस्था में उभरने वाली कामेच्छा, पुत्रैषणा और जीवन साथी पाने की इच्छा भी स्वाभाविक है। विवाहित व्यक्तियों पर न केवल सामाजिक विकास ही निर्भर है, अपितु इसके साथ शेष समाज का पालन-पोषण भी इन्हीं पर आश्रित है। अतएव मनुस्मृतिकार ने कहा है -

यथा वायुं समाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तवः। तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तेन्ते इतराश्रमाः॥ (मनु. ३.७७)

जैसे वायु के सहारे पर सब का जीवन निर्भर है, उसी प्रकार अन्य (तीनों) आश्रम भी गृहस्थ आश्रम पर निर्भर है।

विवाह के वैयक्तिक जीवन की पूर्णता का अनिवार्य पहलू और सामाजिकता का आधार होने के कारण ही हर माता-पिता अपने बच्चे का जीवन सफल बनाने के लिए उसके लिए बच्चे का का जीवन-साथी जुटाने का यथाशक्य प्रयास करते हैं। माता-पिता आदि का यह प्रयास ही विवाह संस्कार की विविध रीति-रिवाजों का मूल कारण है। नवयुगल के अच्छे जीवन की शुभकामनाओं से ही वधु के माता-पिता यथाशक्ति कुछ दहेज के रुप में देते हैं, जिससे वे भावी जीवन की आवश्यकताओं को कुछ अंशों में पूर्ण कर सुखी जीवन बिता सकें। इससे लाड़-चाव के कारण जहां शुभ कामनायें व्यक्त होती है, वहां बच्चों के स्वावलम्बीपन, उनकी आत्मनिर्भरता में अविश्वास भी व्यक्त होता है। इसके साथ ही इसमें धनियों द्वारा अधिक योग्य वर पाने के लिए दिए जाने वाले प्रलोभन का भाव भी छिपा हुआ है। ये

thearyasamaj.org

शुभकामनायें ही आज स्वार्थी वा लोभी व्यक्तियों के कारण समाज के लिए अभिशाप बन कर रह गई है। तभी तो आए दिन दहेज की बलिवेदी पर अनेकों युवतियों को अपना बलिदान देना पड़ रहा है। परिणामस्वरुप सहस्रों परिवार नरक बन पड़े हैं। सभी परिवारों में लड़के-लड़कियाँ होती है, अतः सभी को एक दिन दहेज देना पड़ता है। लड़के की शादी के समय तो लड़के वाले बड़ी-बड़ी मांगे प्रस्तुत करते हैं, पर जब स्वयं देने की बारी आती है, तब उन्हें ये कुरीतियाँ दिखाई पड़ती है। यह भी सत्य है कि बहुत से लड़की वाले भी अपनी शान दिखाने के लिए मना करने पर भी बहुत से आडम्बर करते हैं और देखा-देखी दूसरों के लिए वे रिवाज बन जाते हैं।

विवाह करना दोनों परिवारों की समान आवश्यकता होती है, अतः विवाह पर होने वाले व्यय को दोंनों पक्षों को वहन करना चाहिए। लड़की वाले पर ही अधिक भार डालना कहां की बुद्धिमता है ? विवाह की सफलता वस्तुतः दोनों परिवारों और जीवनों के हर प्रकार के सहयोग, सद्भाव, सहानुभूति तथा परस्पर एक दूसरे को समझने पर निर्भर है। दहेज प्रथा का सबसे बड़ा कारण है, लड़की अर्थात नारी जाति को युवावर्ग की अपेक्षा घटिया समझना। इसीलिए ही, इसकी पूर्ति के लिए दहेज मांगे जाते हैं। नारी को हलका समझने की भावना केवल पुरुषों में ही नहीं पाई जाती, अपितु उनसे भी अधिक स्वयं नारी जाति में भी पाई जाती है। प्रायः माता बेटी की अपेक्षा बेटे को अधिक महत्व देती है और एक बहन अपनी दूसरी बहन को वह महत्व नहीं देती, जो अपने भाई को देती है। न केवल हमारा साहित्य ही, अपितु हमारे अनेक रिवाज भी इस भावना को बढ़ाते हैं। इसीलिए ही भारतीय समाज में लड़की को भार माना जाता है, हालांकि वह परिवार निर्माण और गृहकार्य में बढ़-चढ़ कर सहयोग देती है। वस्तुतः नारी का सहयोग दोनों रुपों में पुरुष से अधिक ही होता है। उसके घरेलू परिश्रम की कीमत आंकने का प्रयास भी स्वार्थवश हमने कभी नहीं किया और न ही नारी ने स्वयम् इस कार्य को महत्व देने की इच्छा प्रकट की है। हर एक व्यक्ति अपने घर की सुव्यवस्था चाहता है, पर उस व्यवस्था को करने वाली को महत्व नहीं देता। आज तो भारतीय संसद में भी नारी-गौरव में सबसे बड़ी बाधा उसका आर्थिक दृष्टि से पिछड़ापन कहा गया है। क्या घर में किए जाने वाले कार्य की कोई महत्ता नहीं ? अतएव आर्थिक स्वावलम्बीपन की ऐसी दौड़ चली है कि आज हमने वास्तविकता से ही मुंह मोड़ लिया है और सभी नौकरी की ओर बेहताशा दौड़ रहे हैं, चाहे उसके लिए कुछ भी बलिदान क्यों न करना पड़े।

भारतीय विवाहों में केवल लड़का-लड़की का ही सम्बन्ध नहीं है, अपितु उनके साथ उनके माता-पिता, भाई-बहन और निकट के रिश्तेदार भी सम्बद्ध होते है। अतः विवाह और उस समय होने वाले व्यय, कार्यक्रम तथा दहेज आदि में सुधार के लिए इन विचारों में परिवर्तन अपेक्षित है।

(१) अच्छा वर पाने की इच्छा :- दहेज प्रथा का एक मुख्य कारण है। बेटी के भावी जीवन को सुखी बनाने के लिए बहुत से लोग अपने से बड़े परिवार को चुनते हैं। लड़के-लड़की के गुण कर्म स्वभाव के विचार की तो बात ही क्या, इस सामान्य नियम को भी भुला दिया जाता हैं। **साम्यो मैत्री विवाहश्च** अर्थात् बराबर वालों में ही मित्रता और रिश्तेदारी अधिक निभती है। यह तो फिर जीवन भर का साथ है।

(२) लड़के के माता-पिता की धन बटोरने की इच्छा :- इसका दूसरा कारण है। अधिकतर लड़के के माता-पिता ही मांगे प्रस्तुत करते हैं।

(३) इसका तीसरा कारण स्वयं लड़का-लड़की भी होते हैं। अपने घर की आर्थिक दशा को जानते हुए भी वे अच्छे, धूमधाम-भरे विवाह की इच्छा रखते हैं और मांगों के समय चुप रहते हैं। इसलिए शान-शौकत, बिजली आदि

thearyasamaj.org

के प्रदर्शन की भावना बारातियों की संख्या, विशेषतः बारात में वर के मित्रों की भरमार आदि बातें अधिक व्यय का कारण बनती है। सादगी से विवाह करना तो पसन्द नहीं आता और प्रायः कहते हैं कि हमारा भी कोई विवाह हुआ था, वह तो गुड्डे-गुड़िया का विवाह था। दोनों पक्षों का अधिक धन वस्त्रों और गहनों पर खर्च होता है। यदि दोनों चाहें, तो इसमें कमी आ सकती है। दबे मन से अनेक लड़कियों की यह इच्छा होती है कि खूब दहेज मिले, जिससे उनका भावी जीवन आराम से व्यतींत हो सके।

(४) अनेक बार भाई-बहन और अन्य रिश्तेदारों की मांगे भी इसमें एक कारण बनती है। अतः लड़के-लड़की के साथ सबके सहयोग की भी अपेक्षा है। तभी इस प्रकार की समस्याओं का समाधान हो सकता है। क्योंकि यह एक सामाजिक समस्या है, अतः सामाजिक स्तर पर ही इसका समाधान होना चाहिए।

(५) कई बार अनेक लड़की वाले भी अपना महत्व बड़प्पन, समृद्धि जताने के लिए खूब प्रदर्शन करते तथा दहेज देते हैं और अनेक बार अपनी बेमेल कन्या की योग्यता में कमी को छिपाने के लिए भी नकद धन और दहेज को बढ़ाया जाता है।

निःसन्देह पिता की सम्पत्ति में कन्या का भी भाग है, परन्तु वह तो आर्थिक स्थिति के अनुरुप ही होगा। पर विवाह पर शक्ति से एकदम अधिक व्यय करना पड़ता है। कई बार अत्यधिक उधार भी लेना पड़ता है। आजकल माता-पिता दहेज अधिकतर मांगों की पूर्ति के लिए या वर परिवार को प्रसन्न करने के लिए ही देते हैं।

दहेज प्रथा को रोकने के लिए आवश्यक है कि सभी के विचारों में परिवर्तन आए। आज की परिस्थितियों को देखकर इन पर विचार हो, न कि रिवाज मानकर लकीर पर चलने का प्रयत्न किया जाए। दहेज के कारण होने वाले तनाव, मारपीट, हत्या आदि को ध्यान में रखते हुए भावी समाधान को समाने रखकर विवाहों का पंजीकरण किया जाए। उसके साथ बारात की संख्या, वस्त्र, गहने और अन्य दहेज का निर्देश भी हो, जिससे विवाद होने पर सारा व्यय और सामान लौटवाया जा सके।

मन्त्री, अधिकारी, संसद और विधानसभाओं के सदस्य आगे आकर सादगी का परिचय दें। वह सादगी केवल अपने विवाह व्यय प्रदर्शन, दहेज तक ही सीमित न हो, अपितु व्यक्तियों के प्रदर्शन पर पाबन्दी की भी हो। सादगी से विवाह कराने वालों को पुरस्कृत एवम् अभिनन्दित किया जाए। बारात की संख्या कम करने के लिए तो सब का सहयोग सर्वथा अपेक्षित है, क्योंकि रिशतेदार और मित्र ही संख्या को बढ़ाते हैं। यदि वे कम हो, तो स्वतः संख्या कम हो जाए।

विवाह जीवन का एक अनिवार्य अंग और स्वाभाविक इच्छा है। वह जितना सरल और सुकर होगा, उतना ही सबके लिए हितकर होगा। अतः दहेज के उन्मूलन के लिए सर्वप्रथम हमें अपने हृदयों में नारी-सम्मान, नारी के लिए पुरुषों के सदृश गौरव की भावना लानी होगी। तब कन्या के छोटेपन के निवारण के लिए दहेज देने की भावना न पनप सकेगी। इसी प्रकार सामयिक स्थितियों और समस्याओं का ध्यान रखते हुए यदि हम खुले दिल से विचार करें, तो हम इसी परिणाम पर पहुंचे कि विचारों में परिवर्तन आने पर ही हमारे समाज के आधारभूत परिवार सुखी, शान्त और समृद्ध हो सकते हैं।

- आचार्य कर्मवीर

thearyasamaj.org

वैचारिक

हम अच्छे होंगे तो आएंगे अच्छे दिन

– चेतन भगत

हम कचरा फैलाते रहेंगे, नियम नहीं मानेंगे, रचनात्मकता का सम्मान नहीं करें तो अच्छे दिन नहीं आएंगे

चुनाव अभियान के दौरान नरेन्द्र मोदी और भाजपा का एक आकर्षक नारा था, 'अच्छे दिन आने वाले हैं'। हालांकि पार्टी ने यह नारा देते समय वक्त नहीं बताया था कि 'अच्छे दिन' ठीक-ठीक किस दिन शुरु होंगे। क्या इनकी शुरुआत मतगणना के दिन से होती है या नई सरकार ने जिस दिन शपथ ग्रहण की उस दिन से ? या उन्हें साकार होने में कुछ वक्त लगेगा, शायद कुछ महीने ? या संभव है कि कुछ साल लग जाएं ? 'अच्छे दिन' की और भी अस्पष्ट बाते हैं। 'अच्छे दिन' का ठीक-ठीक अर्थ क्या है ? क्या इतना काफी है कि हमारे सामने घोटालों से दागदार सरकार अब नहीं है ? या अब एक ऐसा प्रभावशाली प्रधानमंत्री है जो बाबुओं को वक्त पर आने और फाइलों को तेजी से निपटाने के लिए कह रहा है ? क्या शेयर बाजार का बढ़ता सूचकांक 'अच्छे दिन' दिन का द्योतक है। एक हद तक तो ये बातें ठीक हैं। हालांकि यह तो साफ ही है कि भारतीयों को 'अच्छे दिन' से कहीं ज्यादा अपेक्षाएं हैं।

इस छोटे से जुमले में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों की आशा-अपेक्षाओं का विशाल बोझ समाया हुआ है। झुग्गी में रहने वाले को नल का पानी चाहिए। ग्रेजुएट को अच्छा प्लेसमेंट चाहिए। ग्रामीण महिला को घर में टायलेट चाहिए। शेयर बाजार के ब्रोकर को शेयर तेजी का माहौल चाहिए। पालकों को बच्चों के लिए अच्छा स्कूल चाहिए। नौकरपेशा लोगों को सार्वजनिक परिवहन के अच्छे साधन चाहिए। बिजनेस को टैक्स दरों और नियम-कायदों में कमी चाहिए। मतलब सूची अंतहीन है। इस अखबार को पढ़ने वाले मध्यम वर्ग के लिए 'अच्छे दिन' का अर्थ है ट्रैफिक जाम में कमी, साफ-सुधरी गलियां, महंगाई में गिरावट, बढ़ती तनख्वाह, नौकरियों के ढेर सारे मौके, आमदनी के दायरे में आने वाली शिक्षा, सस्ती स्वास्थ्य सुविधाएं और सुरक्षा।

अब सरकार को क्या करना चाहिए ? पूछने लायक सवाल तो यह है : क्या कभी किसी सरकार ने 'अच्छे दिन' के इतने सारे अनुरोधों पर काम करके दिखाया है ? जवाब है नहीं। कोई भी सरकार हो बड़े पैमाने पर समाज के लिए कुछ करने की इसकी अपनी सीमा होती है। फिर वह कितनी ही कुशल, कितनी ही ईमानदार क्यों न हो या उसका इरादा कितना ही अच्छा क्यों न हो। समाज को अच्छा करने लायक बनाने वाला तो खुद समाज ही है। किसी गलतफहमी में नहीं रहे। अच्छी सरकार महत्वपूर्ण है। समाज के फलने-फूलने के लिए यह जरुरी शर्त है पर इतना ही काफी नहीं है। केवल 'अच्छी सरकार' होने से ही आपको वास्तविक प्रगति देखने को नहीं मिलेगी या अच्छे दिन नहीं आ जाएंगे। आपको ऐसा समाज चाहिए, जिसमें लोग मूल्यों की कद्र करते हों या उनमें अच्छे संस्कार हों। दुख है कि हम ऐसा समाज होने से बहुत दूर हैं। हम बदलने तो लगे हैं, लेकिन इस वक्त हम सब के सब अच्छे लोग हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। यदि हम वाकई अच्छे दिन चाहते हैं तो हम खुद को बदलें। सरकार पर जवाबदेही के लिए निगरानी रखें। जरुरत के मुताबिक इसके कामकाज की आलोचना और सराहना कीजिए। मगर यह ध्यान रखिए कि केवल सरकार को ही नहीं, हमें भी बदलने की आवश्यकता है। कुछ लोग कहते हैं कि मै अकेला क्या कर सकता हूँ ? तो यहां कुछ खास सुझाव पेश है। ये हम भारतीयों की ऐसी आदतें है, जिन्हें बदलने की जरुरत हैं।

पहली बात, अपने से नीचे वालों की परवाह कीजिए। क्या आप जानतें हैं कि आपके घर में काम करने वालों के बच्चे किस प्रकार के स्कूल में पढ़ते हैं ? क्या उन्हें बिजली-पानी मिल रहें हैं ? क्या उन्हें तकलीफ में देखकर आप विचलित हो जाते हैं ? या यह सोचते हैं कि यह तो उनकी नियति है ? क्या उन्हें अच्छे दिनों का हक है ? या

thearyasamaj.org

अच्छे दिन पर पहला अधिकार आपका है ? सबके अच्छे की अवधारणा हमारे समाज से नदारत है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम कम्युनिष्ट बन जाएं और हर वक्त अपराध बोध से ग्रस्त रहें। हां, इसका वह मतलब जरुर है कि हम सारे भारतीयों के लिए न्यूनतम जीवन स्तर के लिए हमेशा संघर्ष करते रहे। क्या कभी आपने अपने घर में काम करने वालों को साप्ताहिक अवकाश देने के बारे में सोचा है ? नहीं ? क्यों ?

दूसरी बात, सिविक सेन्स यानी नागरिकता का बोध। नियम-कायदों का पालन कपरें। कचरा न फैलाएं, यातायात के नियमों का पालन करें या ऐसा कुछ न करें जिससे समाज को नुकसान पहुंचे। यदि नागरिक नियमों का पालन न करते हो तो दुनिया का सर्वश्रेष्ठ ट्रैफिक कमिश्नर भी कुछ नहीं कर सकता। इतनी बड़ी संख्या में शिक्षित भारतीय जेब्रा क्रांसिग पर कार क्यों दौड़ा ले जाते हैं ? क्यों हम भारतीय हमारे सुंदरतम पर्यटन स्थलों पर भी प्लास्टिक के रैपर व अन्य सामग्री फेंकने में संकोच नहीं करते ? क्या हमारे माता-पिता ने इतनी सी बात हमें नहीं सिखाई ? या यह इस भारतीय भरोसे का नतीजा है कि यदि बच निकलने की गुंजाइश हो तो कुछ भी करने में कोई हर्ज नहीं है। यदि हमारी सोच और कर्म ऐसे हों तो कोई भी सरकार क्या कर सकती है ?

तीसरी बात, महिलाओं का आदर करें। आदर का मतलब यह नहीं है कि आप उनके कदमों में गिर जाएं। या उन्हें देवी या मां या बहन कहना शुरु कर दें। आदर का अर्थ यह है कि उनके साथ मानवीय व्यवहार करें। इसका अर्थ है कि उनकी राय को सम्मान देना, उनको अपनी बात रखने का मौका देना। इसका मतलब है कि उन्हें खुद के समान दर्जा देना। सौ साल पहले ऐसा नहीं था। वक्त बदल गया है और अब महिलाओं को भिन्न दृष्टिकोण से देखने की जरुरत है। इसी तरह सारे भारतीयों को सम्मान देने की आवश्यकता है। फिर चाहे उनका धर्म, रंग या नस्ल कोई भी क्यों न हो। कोई सरकार किसी को पूर्वाग्रह छोड़ने पर मजबूर नहीं कर सकती। जो व्यक्ति और समाज इसे मानते हैं, उन्हें बदलना पड़ेगा।

चौथी बात, प्रतिभा, इनोवेशन, रचनात्मकता, जोखिम लेने की तैयारी और उद्यमशीलता का सम्मान कीजिए। इसकी बजाय हम सत्ता, धन (इसे फिर चाहे जिस तरह से क्यों न हासिल किया गय हो), ऊंची पहुंच और जीवन में अच्छी हैसियत प्राप्त कर वालों का सम्मान करते हैं। हम यह सोचते हैं कि बिजनेस ौर बिजनेसमैन बुरे होते है। इसलिए हम उनकी जिंदगी यथासंभव मुश्किल बनाने के कानून बनाते हैं। कम बिजनेस, कम नौकरियां, कम अच्छे दिन। हम यह भी सोचते हैं कि बौद्धिक चोरी (पायरेसी) में कोई हर्ज नहीं है और बौद्धिक संपत्ति का कोई महत्व नहीं होता। ठीक है आप रचनात्मकता का सम्मान न करें। यह देश के बाहर चली जाएगी। रचनात्मकता नहीं, संपत्ति का निर्माण नहीं। अच्छे दिन नहीं। तो बात समज में आ गई न ? देश ने उसके सामने मौजूद सर्वश्रेष्ठ विकल्प का इस्तेमाल करते हुए सरकार लाने का सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। हालांकि, अच्छे दिनों के लिए सिर्फ अच्छी सरकार से बढ़कर भी कुछ चाहि होता है। इसके लिए अच्छे लोग होना भी जरुरी है।

संकलन : अभिव्यक्ति-दैनिक भास्कर १६ जून २०१४

कविता – कुछ देखो : कुछ सोचो

पंडो के पेट और तीर्थों के मठ –
जनता की शुद्ध कमाई को जाते गटक।
छल-छद्म, प्रपञ्च व्यूह रचते बेखटक,
पाखण्ड भ्रमजाल का होता रहता नाटक।। कुछ देखो...
मर्म है – धन-सुख-सन्तान का सबको चटक,
पुण्य-स्वर्ग-मोक्ष की चाहत हैं – ललल।
दुःख दारिद्र हटे और उद्योग हो निष्कण्टक,
संभावना के झूले में सब झूलते लटक।। कुछ देखो ...
कुछ यहाँ- कुछ वहां, कुछ देवी-देव नाम लेकर,
फूल-अच्छत-दक्षिणा संग लेते झटक।
शान्ति – भ्रान्ति, जाप-ताप, बलि का कपट,
पाप के निवारणार्थ देते यजमान को पटक।। कुछ देखो...
बून्द-बून्द सिन्धु जमा होता पौ-बारह,
मांस-मदिरा घर में हो पापों का जमघट।
पीढ़ी दर पीढ़ी की व्यवस्था और स्वांग-ढोंग,
देखने को मिलता हर तीर्थों में प्रगट।। कुछ देखो....

रचयिता – सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत', आर्य सदन,
नेमदारगंज, नवादा-बिहार

thearyasamaj.org

पर्यावरण

जल और वायु की शुद्धि की आवश्यकता

- ले. डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। शारीरिक उन्नति इसलिए कि अच्छा स्वास्थ्य न हो तो मनुष्य कुछ नहीं कर सकता और शरीर तो बलशासली हो आत्मिक ज्ञान न हो तो जीवन की गाड़ी को उलट देगा। अतः दोनों प्रकार की उन्नति आवश्यक है इनके साथ सामाजिक उन्नति अतिआवश्यक है तभी सभी में सामंजस्य बंध सकता है। इन सबके लिए आवश्यक है कि जिस वातावरण में हम रह रहे हैं स्नान करते हैं घूमते-फिरते हैं अपनी आजीविका का कार्य करते हैं, वह घर का वातावरण वहां की बायु, जल, मिट्टी आदि भी स्वच्छ व शुद्ध हो पवित्र हो नदियों का जल स्वच्छ व शुद्ध हो झरने सरिता तालाब स्वच्छ हों, यह तभी संभव है जब हम इसे स्वच्छ रखेंगे, इनकी ओर ध्यान देंगे इनका प्राकृतिक स्वरुप बनाकर रखेंगे।

आज गंगा की ही ले लें लाखों करोड़ों टन कचरा, गंदा पानी, नालों आदि के द्वारा गंगा में छोड़ा जाता है, जिससे इसका जल प्रदूषित होता जा रहा है, गंगा का जल ऐसा है कि वह जहां से गंगोत्री गोमुख से निकलती है वहां अनेकों प्रकार के खनिज लवण इसके साथ आते हैं। हिमालय वनस्पतियों का भण्डार है। जड़ी-बूटी व औषधियों का समुन्द्र है। इन सबका प्रभाव गंगा जल में होता है। वह हमारे शरीर को निरोगी बनाता है।

गंगा जल अत्यन्त शीतल मधुर सुपांच्य प्यास को बुझाने वाला ऋतिकारक नेत्रों के लिए लाभकारी होता है। त्वचा के लिए भी अच्छा होता है। मैल को धो देता है। उस गंगा को दूषित करने का भी धर्म हमने बना रखा है। लाखों टन बाल मुण्डन कर गंगा में डाले जाते हैं। आज गंगा के किनारे पर ही मुण्डन संस्कार करने का प्रचलन है, सहस्रो रुपये खर्च कर मुण्डन हेतु बच्चों को गंगा नदीं पर ही ले जाते हैं। वहां नाई से सिर के बाल उतारकर गंगा में प्रवाहित करते हैं। जबकि यह वेद विरुद्ध कार्य है इससे गंगा जल अशुद्ध होता रहता है।

इसी प्रकार अन्तिम संस्कार भी गंगा के किनारे ही किए जाते हैं। शव दाहकर उसकी राख व अस्थियाँ गंगा में ही डाल दी जाती है, इससे गंगा का जल प्रदूषित होता है, तत्पश्चात् वहां सभी जन मुण्डन कराते हैं और उनके सिर के बाल गंगा में डाल दिए जाते हैं।

जिस गंगा को हम माँ के नाम से जानते हैं, उसके प्रति एक पवित्र भावना होती है क्या उस माँ को शबों की राख, शवों के अवशेष हड्डियां व बाल आदि खिलाने चाहिए, क्या यह हमारी अंधी श्रद्धा नहीं है। यह विचार व कृत्य एकदम अवैज्ञानिक व अवैदिक है। हमें इन कृत्यों पर अविलम्ब रोक लगानी चाहिए। गंगा हमारा पेट भरती है अन्न देती है। इसके जल से खेतों की सिंचाई होती है, फसलें होती है अन्न मिलता है। हम उस गंगा को दिन-रात प्रदूषित करते रहते हैं। प्राचीन काल में गंगा के किनारे गुरुकुल व आश्रम होते थे अनेक ऋषि मुनि साधु-सन्त वहां निवास किया करते थे। प्रातः सायं वहां अग्निहोत्र होते थे, जिससे वहां का वातावरण सुन्दर व सुखद पवित्र रहता था। अग्निहोत्र की राख वहां की मिट्टी में ही डाली जाती थी और जल को निर्मल करती थी। जड़ी बूटियों की राख गंगा जल के साथ खेत खलिहानों में जाकर भूमि को उपजाऊ बनाती थी। फसलों को निरोगी बनाती थी, वह अन्न जो गंगा जल से पोषित उत्पन्न होता था, लाभदायक व आरोग्यवान होता था।

अग्निहोत्र तो घर में होते थे, सम्पूर्ण राज्य में घर घर से वेद मन्त्रों की ध्वनि सुनाई देती थी। अग्निहोत्र का धूम वातावरण को सुंगधित कर देता था। सबके मन प्रसन्नचित रहते थे, बुद्धि तेज होती थी। उस समय एक और बात थी जो आज से विपरीत थी, गोधन की भरमार थी, गौवे अत्यधिक थीं प्रत्येक घर में कई कई गौवें होती थी। गौ अधिक होने से

thearyasamaj.org

लाभ ही लाभ है। यदि गाय दूध न भी देती हो तो उनका गोबर, गोमूत्र व गूगल की सुगंधित वाली श्वास वातावरण को पवित्र करती थी। गाय में अंनगिनत गुण हैं, इसलिए हमारे पूर्वजों ने इसके महत्व को समझा और गोवंश की वृद्धि हेतु प्रयत्न भी किया।

आज गाय की जगह कल कारखानों, रासायनिक उद्योगधंधों ने ले ली है। ऊँची ऊँची चिमनियों से करोड़ों टन जहरीला धुआँ शहरों में वायु मण्डल में छोड़ा जाता है। इनमें फासजीन हाइड्रोजनसल्फाइड, नाइट्रस आक्साइड, सल्फर डाईआक्साइड जैसी हानिकारक व जीवन को नष्ट करने वाली गैसे होती है। सल्फ्यूरिक एसिड नाइट्रिक एसिड जैसे तेजाब मृदा वायु व जल को प्रदूषित कर रहे हैं। ऐसे में मानव जीवन कैसे सुखी रह सकता है। इनसे प्रदूषण आज कल नगर औद्योगिक क्षेत्रों से लेकर ग्राम्य जीवन को भी कुप्रभावित कर रहा है। कैंसर, तपैदिक, अस्थमा, उच्च रक्तचाप, घबराहट, अनिद्रा अल्सर जैसे रोगों से लाखों मौत हो रही है। मनुष्य का जीवन नर्क बनकर रह गया है।

उधर बाजार में बिकने वाले उत्पाद, दूध, घी, गर्म मसाले, आटा-दाल, सब्जी आदि भी इन विषैले तत्वों से दूर नहीं एक तो जल मृदा प्रदूषण से इन सबका विषाक्त होना दूसरे बाजार की वस्तुओं में विषयुक्त द्रव्यों की मिलावट की जाती है। दालों पर रासायनिक पदार्थ की पालिश सब्जियां में कीटनाशक, दूध के लिए आक्सीटोफिन का प्रयोग मनुष्य को रोगी बना रहा है। हल्दी, तेल, आटा आदि अनेक द्रव्यों में मिलावट से रोगों को निमंत्रण दि या जा रहा है। आज पीने को दूध नहीं परन्तु पर्वों पर लाखों न दूध की मिठाईयों को बाजारों में सजा दिया जाता है।

यह है लघु विचार हम देख रहे हैं चारों ओर प्रदूषण का जाल फैलता ही जा रहा है। एक ओर भयंकर प्रदूषण है। इन्टरनेट का, मोबाईल का, टी.वी. का जिनकी किरणों से भी शरीर मस्तिष्क हृदय, श्वसन संस्थान व प्रजनन क्षमता पर कुप्रभाव पड़ रहा है। टी.वी. टावर आदि के पास इन किरणों का प्रभाव गर्भवती महिलाओं व उनके भ्रूण (गर्भस्थ शिशु) पर पड़े बिना नहीं रह सकता।

हमें इन समस्याओं के निराकरण हेतु सामाजिक रुप से सरकार के साथ संघर्ष करना होगा और प्राचीन अतीत की ओर चलना होगा जहां नगर व राज्य का प्राकृतिक सौंदर्य बढ़े लोग हृष्ट-पुष्ट हों गौवंश की वृद्धि हो गौशालाओं को उद्योग का रुप दिया जाए, अग्निहोत्र, वायु जल की शुद्धि का सर्वोत्कृष्ट पवित्र कर्म है इसे बड़े स्तर पर करें। कारखानों के जहरीली गैसों को रोकें जल व मृदा को दूषित होने से बचाएं वायु शुद्ध हो तभी हम शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति कर सकते हैं।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

व्यवस्थापक का आदर्श

स्वकार्ये शिथिलो यः स्यात्किमन्ये न भवन्तिहि ।
जागरूकः स्वकार्ये य स्ततूसहायाश्च तत्समाः ॥ (अमरुक)

भावार्थ :- जो मनुष्य स्वयमेव अपने कार्य में शिथिल लापरवाह उदासीन होवे तो उसके कर्मचारी भला कार्य में उदासीन क्यों न होंगे ? निश्चय ही है कि - वे भी कामचोर बन जावेंगे। और जो व्यक्ति अपने कार्य में सचेष्ट रहेगा उसके सहयोगी भी कार्यरत रहेंगे।

किसी भी क्षेत्र में आप कार्य करते हों आपके लिए यह नितांत आवश्यक है कि - आप एक उत्तम व्यवस्थापक बनें। अपने कार्य में तल्लीन रहें। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका अनुकरण करने लगेंगे।

- सुभाषित सौरभ

thearyasamaj.org

उपादेयात्मक श्रेष्ठ जीवन के सूत्र

- कमलेश नेहरा

सृष्टि की उत्पत्ति एक चिरन्तन रहस्य है। सृष्टिकर्त्ता ईश्वर को हम निराकार स्वरूपमानते हैं। हमारा देश ऋषियों-मुनियों एवं देवी-देवताओं का देश माना जाता है। हमारी संस्कृति आदर्श संस्कृति है। वेद हमारी संस्कृति का आधार है। कहा जाता है, निराकार ईश्वर ने ऋषियों-मुनियों को वेदों का ज्ञान दिया।

मनुष्यों द्वारा यह ज्ञान ऋषियों की वाणी को सुनकर प्राप्त किया गया। अतः वेद को श्रुति भी कहते हैं। वेद चार है - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। इन वेदों में जीवन से संबंधित हर पहलू की जानकारी समाहित है। वास्तव में वेद ही हमारे दिग्दर्शक है। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को मानव जीवन का लक्ष्य कहा जाता है। मानव शरीर की रचना अग्नि, जल, वायु, आकाश व पृथ्वी इन पंचतत्त्वों से मिलकर हुई है। वैदिक साहित्य में संकलित कुछ सरलतम बातें यदि हम आज अपने जीवन का अनिवार्य अंग मानकर अपनाएँ, तो आज के मशीनी युग में नैतिकता की राह में भटके हुए लोगों को सम्भवतः दिशा मिल जाए।

आज चहुँ ओर जो बुराइयाँ फैली हुई है, उसका मुख्य कारण यही है कि हम अपनी संस्कृति को भूल बैठे हैं। स्वार्थ, लोभ, द्वेष, भ्रष्टाचार और आतंक के विषैले नाग सब ओर फन फैलाये रेंग रहे हैं।

मैं अपने बच्चों को यही कहना चाहती हूँ कि अपनी दिनचर्या में बाकी चीजों के अतिरिक्त कुछ ऐसी बातो को अपनाएँ, जो कि अति आवश्यक है। यथा :-

१. माता-पिता एवं आचार्य की सेवा करना।
२. ईश्वर का स्मरण करना।
३. पठन-पाठन। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ और ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें पढ़ने का प्रयास करना।
४. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी बातों का ध्यान रखना।
५. घर-परिवार व कार्य क्षेत्र में अपने साथियों व सहयोगियों के साथ मधुर व्यवहार।
६. अच्छी संगति में रहना व शिष्टाचार को अपनाना।
७. नशे आदि से दूर रहना।

गायत्री मंत्र जीवन का मूलमंत्र है। प्रातःकाल स्नान के पश्चात् एवं रात्रि को शयन से पूर्व यदि एकाग्रचित होकर इस मंत्र का जाप किया जाए तो स्वतः ही मन स्थिरता की ओर बढ़ना लगता है।

ओ३म् भू र्भुवः स्वः तत्सवितु वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

इन मंत्रो में सभी प्रार्थनाओं का सारांश है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

पता : न.पा.गर्ल्स, सी.सै. स्कूल, गोल मार्केट, नई दिल्ली

विचार गंगा

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जाएँ और
इतने गरम भी मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।
इतने सरल भी मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें
और इतने जटिल भी न बनो कि लोग तुमसे मिल न सकें।
इतने गंभीर भी न बनो कि लोग तुमसे ऊब जाएँ
और इतने चंचल भी न बनो कि लोग तुम्हें मानें ही नहीं।
इतने महंगे भी मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सकें और
इतने सस्ते भी न बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।

thearyasamaj.org

विश्लेषण त्मक

"महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है"

- ले. खुशहालचन्द्र आर्य

यह लेख मैने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित "यजुर्वेद सन्देश" पुस्तिका से उद्घृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत् के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान है। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते है। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रुप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्दराम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में **"आदर्श आर्य प्रवर"** शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के लोकार्पण के समय सोमदेव जी मेरे गांव देवराला (हरियाणा) भी गये थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी इन्होने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक "यजुर्वेद सन्देश" को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक के पढ़ने से सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेद भाष्य, अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले से भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड के ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ है। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है, इसे पढ़कर मैं आशा करता हूं कि सुधि पाठकगण वेदों के सही स्वरुप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इसी भांति है।

१. मध्यकालीन वेद भाष्यकार :- मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं, जिन्होने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाय किया है। विक्रम संवत ६८७ में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के ४-५ सूत्रों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेदभाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही उद्गीथ हुए हैं, उन्होने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवे सूक्त के चौथे मन्त्र से ८६ सूक्त के ६ मन्त्र तक वेद भाष्य किया। यह भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की १२वीं शताब्दी में वेंकट माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की १३वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के १६४ सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् १२५५-१३३५) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् १३७२-१४४२) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी दिये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत ११००) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् १६४५) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार दिया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अश्वमेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशु हिंसा जैसे जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैतिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् ११०० में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् १३६० के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं अध्यात्म परकअर्थ भी किये। माधव जो विक्रम संवत शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया।

thearyasamaj.org

आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रान्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भष्य किया। इसमें भी उन्होने मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि ग्रन्थों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रुप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इनमें भी पशु हिंसा, मांस-भक्षण, जादू-टोना, मारम-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादिदेवताओं का शरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हानि (आहूति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृष्य रुप में यज्ञ स्थल पर अपना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिध्या विचार धारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य भी किया, जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिये ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं, इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिये ही उपयोगी है। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रुचि हट गई। वेद कथा, वेद प्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भगवत गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वान :- आधुनिक युग (१८वीं, १९वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरित्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् १८५० में डॉ. एच.एच विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो. मेक्समूलर ने रुद्र, मारुत, वायु आदि देवताओं के सूक्तों का कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् १८७६-१८७७ में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान ए. लुडविग, एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर.टी.एच. विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् १८४८ में) सामवेद (कौथुम शाखा) का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक संहिता) का डब्लू. एच. ----- ने तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् १९०१ में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेश में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द :- महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डना करना, शंका-समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न-बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे-बड़े ४३ ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने इन पर ईंट-पत्थर फेंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत्य किये, किन्तु गुरु भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया वचन उन्होने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उत्वर और महीधर ने गो मेध, अश्वमेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के ७ से २२वें मन्त्र तक पशु को बांधना, देवता के लिये उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिये की गयी हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कृकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को **अघ्न्या** अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गो मेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं, अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है, अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शब का अन्त्येष्टि संस्कार को नर मेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

पता : गोविन्दराम आर्य अण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड दो तल्ला, कोलकाता - ७००००७

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती "एक जीवन पथ"

- ीमती किरण खोसला

महान पुरुष :- महान व्यक्ति कई प्रकार के होते हैं, कोई धन से कोई बल से और कोई विद्या से कोई धर्म से या सदाचार से महान माने जाते हैं पर जो व्यक्ति सभी प्रकार से बड़ा होता है उसके बड़प्पन का क्या कहना।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महान व्यक्तियों में एक थे जो धन धान्य से पूर्ण घर को छोड़ कर संसार के कल्याण के लिये तपस्या करने निकले उनका सुन्दर आकर्षक सुडौल शरीर तेजस्वी मुखमण्डल, विस्तृत ललाट चौड़ी छाती घुटनों तक लम्बी भुजायें, देखने वालों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। विद्या और बुद्धि का भंडार था। चार वेद छः शास्त्र उनकी जिव्हा पर नाचते थे। काशी, बनारस, मथरु आदि स्थानों के सैकड़ों पंडित मिलकर भी उन्हें शास्त्रार्थ में कभी नहीं हरा पाये।

सभी बड़ी बात यह है कि वे पूर्ण सत्यवादी थे। उन्होंने बड़े से बड़ा कष्ट उठाया, परन्तु सत्य को नहीं छोड़ा। वे पूर्ण सदाचारी थे छलकपट और दिखावे से उन्हें घृणा ती इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी एक आदर्श एवं पूर्ण पुरुष थे। हम सभी को उनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

होनहार बालक का जन्म :- "कहते हैं होनहार बिरावन के होत चीकने पात" के अनुसार बचपन से ही वे सुशील, बलवान, बुद्धिमान एवं धार्मिक थे। इनका जन्म भारत के पश्चिम गुजरात प्रांत में कठियावाड़ के अंतर्गत मोरवी नामक देशी राज्य के टंकारा ग्राम में १८८१ सन् (१८२५) ईसवी को करसन लाल जी तिवारी औदीच्य ब्राह्मण के घर हुआ था। इनके बचप का नाम मूलशंकर तिवारी था इनके पिता जमींदार थे। इस प्रकार घर से सब प्रकार की सुख सुविधाओं से संपन्न थे।

शिक्षा :- एक ब्राह्मण बालक की जैसे शिक्षा पहले के लोग देते थे उसी प्रकार की शिक्षा बालक मूलशंकर को प्राप्त हुई। आठवें वर्ष यज्ञोपवीत संस्कार और विधिवत विद्या अध्ययन शुरु हुआ। वे बहुत तीव्र बुद्धि वाले बालक थे। उन्होने संस्कृत भाषा व्याकरण और यजुर्वेद १४ वर्ष की आयु में ही पूर्म कर लिया था।

शिवरात्रि (बोधरात्रि) :- शिवरात्रि के दिन बालक मूलशंकर ने यह पहला व्रत उत्साह के साथ रख इसके महत्व को जानने की प्रबल रुचि रखी। शिवरात्रि में जागरण तथा शिव-पूजा की महिमा बताई पहले तो बालक उत्साह से भरा था जैसी ही रात जागरण पर शिव के दर्शन करने की इच्छा का निश्चय किया अचानक कुछ चूहे निकलकर शिव मूर्ति पर चढ़ ये हुये फल, मिठाइयों को आनन्द से खाने लगे इसे देखकर बालक मूलशंकर के मन में हलचल हुई उसने सोचा कि भगवान बड़े बड़े राक्षसों को मार गिराता है सारी दुनिया को चलाता है वह महादेव अपने ऊपर से चूहे को हटा नहीं पाता है। बस उसी दिन से स्वामी जी का हृदय परिवर्तन होने लगा।

कठिन यात्रा :- यद्यपि अबतक स्वामी जी ने बहुत विद्या पढ़ीप रन्तु उनकी आत्मा को शांति नहीं मिली। अतः हिमालय में योगियों की खोज में निकले और उन्होने सारा हिमालय छान मारा, जंगलों को पेट के बल चल कर किया कांटों से उनका शरीर छलनी हो गया अनेक स्थानों पर बाघ, भालू तथा जंगली पशुओं से सामना हुआ। तो कहीं पर नदी पार करते, तो कहीं बर्फ से शरीर शून्य हो गया। खाने को कहीं जंगली फल फूल मिले तो कहीं पाव भर दूध पीकर ही और कई कई दिन तो निराहार ही रहना पड़ा, पर स्वामी जी निराश नहीं हुये।

वेदों का अधिकार :- स्वामी जी का कहना था कि वेदों का अधिकार सभी मानव जाति को है। एक बार रुड़की में स्वामी जी के भाषण में एक शिष्य आ बैठ जो कि अपने धर्म का पालन बड़ी कट्टरता से करता था। पर वे लोग अपने हाथों से पशुओं को मारा करते थे, इसलिये अशुद्ध माने जाते थे, किसी ने घृणा करके उसे वहां से उठा दिया। वह दूसरी

thearyasamaj.org

जगह बैठ गया तो वहां से भी उसे उठा दिया गया। इस प्रकार यह स्थिति को देखते हुए स्वामी जी ने उठाने वाले व्यक्ति को रोका और कहा इसे बैठने दो, धर्म की बात को सभी जन सुन सकते हैं, जैसे भगवान के बनाये हुये पानी, वायु, सूर्य धरती, आकाश सबके लिये है। इसी प्रकार वेद भी सबका है वेद के उपदेश को सभी सुन सकते हैं।

कर्णवास निवासी ठाकुर गोपाल सिंह आदि ऋषि के हाथों यज्ञोपवीत लेकर उनके शिष्य बने थे उनकी ताई ९१ वर्ष की थी। यद्यपि वे कई गांवों की मालकिन थी पर वे सिर्फ जौ की रोटी खाती थी। एक दिन वे स्वामी जी के चरणों में आकर पूछने लगी कि महाराज मुझे मुक्ति का मार्ग बताइये तब स्वामी जी ने उस बूढ़ी माँ को गायत्री मंत्र का उपदेश देकर उसका जप करने के लिये कहा तब किसी ने पूछा कि स्त्रियाँ भी गायत्री मंत्री का जाप करती है, तब पुनः स्वामी जी ने कहा कि वेद पढ़ने का अधिकार सभी जन जाति को है।

मातृशक्ति को नमन तथा मूर्ति पूजा का खण्डन :- चित्तौड़गढ़ की बात है रास्ते में एक बड़ के पेड़ के नीचे दो तीन मूर्तियां रखी थीं, जब वे उधर से जाने लगे उन्होने अपना सिर झुका दिया तब एक व्यक्ति ने कहा महाराज आप चाहे कितना ही खण्डनं करो पर उन मूर्तियों का कुछ ऐसा प्रभाव है कि अपने आप सिर झुक जाता है। सुनकर ऋषि दयानन्द वहीं खड़े हो गये और कहने लगे मेरा सिर मूर्ति के लिये नहीं झुका है अपितु सामने जो बालिका खेल रही है उस मातृ शक्ति के लिये झुका है, इससे हम सब जन्म पाते हैं। अतः इसका सम्मान करना इसके आगे सिर झुकाना हम सभी का कर्त्तव्य है यह सुनते ही सब लोगों में सन्नाटा छा गया और उन सबका भी सिर अनायास झुक गया।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द के जीवन के बहुत से वृतांत अस्मरणीय है जिनके जीवन दर्शन को भूला नहीं जा सकता। अतः अंत में साढ़े तीन माह में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश नामक इतने बड़े ग्रंथ को जिसमें ३७७ ग्रंथों की बातें उसमें लिखी है। १५०० वेद मंत्र और उनके श्लोकों की व्याख्या की गई है। आज कोई भी रिसर्च स्कालर बहुत बड़े पुस्तकालय में बैठक कर भी ऐसा ग्रंथ लिखने में कई साल लगा देगा।

इससे पता चलता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के पास ज्ञान का भंडार था और अंत में उन्होने देश के विद्वानों के आग्रह पर एक संगठन तैयार किया जिसका नाम **आर्यसमाज** रखा गया और इस संगठन की स्थापना की गई, जिसके १० नियमों की विवेचना की जो कि सच्चाई की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

आर्यसमाज का अभिप्राय :- आर्य का अर्थ है ईश्वर पुत्र अर्थात् ईश्वर की वेदाज्ञा पर चलने वाला श्रेष्ठ व्यक्ति। **आर्यसमाज** का अर्थ है श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज व संगठन इसलिये इन्हें युग प्रवर्तक भी कहा गया है। मानव जाति की ओर से इन्हें शत् शत् प्रणाम।

पता : १४२-सी, सड़क नं. १७, स्मृति नगर, भिलाई (छ.ग.)

ऐसा हिन्दुस्तान हो

सुख-सुविधा से परिपूर्ण यह अपना हिन्दुस्तान हो,
अच्छे हो आचरण सभी के ऐसा हिन्दुस्तान हो।
टूटे नहीं एकता अपनी बिखरा नहीं समाज हो -
कल की उन्नति होने के आभास हमें जो आज हो।
छूटे गन्दी राजनीति से पिंड हमारे देश का,
विद्रूपण हो पाए न अपनी संस्कृति के परिवेश का।
ऐसा वातावरण बने जिसमें सामाजिक न्याय हो,
वर्ग भेद सारे मिट जाएं कहीं न दहती हाय हो।
समता का दर्शन-चिन्तन हो सब में दृष्टि समान हो,
मुक्ति रोग से दुःख-दारिद्र से, शक्तियुक्त आह्वान हो।
ऐश्वर्यों का ईश्रव प्रकटे, स्वर्गोपम यह स्थान हो,
युग-युग यह स्वप्न संजोये ऐसा हिन्दुस्तान हो।
अपना विभव महान्, देश का फिर से अभ्युत्थान हो,
सारे जग में सदा चमकती इसकी अपनी शान हो॥

रचयिता : मोहनचन्द्र मन्टन, ए.बी.९०४, सरोजिनी नगर नई दिल्ली-२३

thearyasamaj.org

विचारात्मक

मानव धर्म

ले. रमणदास महा ा,
सेवानिवृत्त शिक्षक

'मानव' शब्द मनु संज्ञार्थक शब्द के साथ अपत्यार्थक 'अण' प्रत्यय जुड़कर बना है। जिसका अर्थ है मनु की संतान। 'मनुष्य' शब्द की परिभाषा करते हुए विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार के मत प्रकट किये हैं। किसी ने मानव जीवन को आकस्मिक घटना, किसी ने इच्छाओं की समष्टि, किसी ने अन्यान्य पशुओं की अपेक्षा श्रेष्ठ, किसी ने सामाजिक प्राणी, किसी ने बुद्धिजीवी प्राणी तो और किसी ने मनु की संतान कहा है। वैदिक शब्द कोष 'निरूक्त' तथा 'निघण्टु' के संग्रहीता यास्काचार्य ने कहा है - **"मत्वा कर्माणि सीव्यंति इति वा मनोरपत्यं पुमान इति वा"**। अर्थात् जो अतीत कर्म परिणामों को भित्ति-भूमि बनाकर भविष्य परिणामों के बारे में भली भांति सोच विचार करके प्रत्येक कार्य सम्पादन करता है, उसे 'मानव' कहते हैं, अथवा मनु की संतान होने के नाते मानव कहा जाता है।

वैदिक कालीन प्रख्यात समाजशास्त्री मनु महराज ने अपनी कृति मनुस्मृति में मानव के गुण धर्म के बारे में कहा है -

"धृतिः क्षमा दमो अस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकंधर्म लक्षणम् ॥"

अर्थात् - धैर्य, क्षमा, मनोनिग्रह, अचौर्य, शुचि, इन्द्रियों का वशीकरण, बुद्धि, विद्या तथा अक्रोध ये दस मानव के गुणधर्म है। इन्हीं गुणों के कारण मानव को अन्य प्राणियों की अपेक्षा श्रेष्ठ माना गया है। उपरोक्त गुणधर्मों पर विशद दृष्टि डालें -

(१) धृति (धैर्य) :- जीवन सुख-दुख, जय-पराजय, वैभव-पराभव, आपदा-विपदा, उत्थान-पतन आदि द्वन्दों का मिश्रण है। उपरोक्त दोनों अवस्थाओं में विचलित न होना धृति (धैर्य) है। न तो सुख, जय, वैभव, संपदा, शुभ, मान, लाभ, उत्थान आदि अनुकूल परिस्थितियों में खुशी से अति प्रसन्न होना चाहिए और न दुःख, पराजय, पराभव, विपदा, अशुभ, अपमान, हानि, पतन, आदि प्रतिकूल परिस्थितियों में दुःख-कूलित होना चाहिए।

(२) क्षमा :- किसी के द्वारा गलत कार्यों के माध्यम से क्षति पहुंचाये जाने पर उसके प्रति प्रतिशोधात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त न करते हुए उसे क्षमा कर देना चाहिए। चूंकि मनुष्य स्वाभावतः अल्पज्ञ है अतः उससे भूल होना स्वाभाविक है। अतः उसकी गलतियों को नजरअंदाज करके उसे माफ करना चाहिए। यह बात याद रखने योग्य है कि ३ बार से अधिक क्षमा करना अपनी कमजोरी प्रकट करना है अथवा उसके कुकर्मों को स्वीकार व प्रोत्साहित करना है। अतः तीन बार से अधिक क्षमा नहीं करना चाहिए। तीन बार से अधिक क्षमा या तो कमजोर व्यक्ति करते हैं अथवा सिद्ध संत और देवता करते हैं।

(३) दम (मन पर काबू पाना) :- मन रूपी समुद्र में हरक्षण उत्ताल विचार-तरंगे उठती रहती है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि, राजसिक व तामसिक, कामनाओं तथा दया, क्षमा, करुणा, शांति, भक्ति, तितिक्षा, सेवा, सहानुभूति, सहायता आदि परोपकारी सात्विक भावनाओं का उत्थान-पतन सदा लगा रहता है। मन इतना क्षिप्रगति संपन्न है कि विज्ञान के इस परमोत्कर्ष युग में भी न तो इसके गति तुल्य कोई विमान और ना ही इसकी गति को मापने का कोई यन्त्र का ही निर्माण हो सका है। श्रीमद्भगवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है -

असंशयं महावाहों मनः दुर्निग्रहम चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥

अर्थात् - हे महापराक्रमी अर्जुन ! मन अत्यन्त चंचल और अत्यन्त कष्टपूर्वक वश में करने योग्य है। फिर भी इसे अभ्यास और वैराग्य के द्वारा वश में किया जा सकता है। केवल मन ही बन्धन तथा मोक्ष का एकमात्र कारण है। मनोत्थित सात्विक भावनाएँ मनुष्य को देवत्व प्रदान कर स्वर्ग में पहुंचा देती है। जबकि राजसिक एवं तामसिक भावनाएँ उसे राक्षस और पशुओं की श्रेणी में रखकर नर्क के अंधकार पूर्ण दुःखमय गहरे गड्ढे में ढकेल देती है। इस मन पर विवेक रुपी अंकुश लगाकर इसे वश में करना मानवोचित गुणधर्म है।

thearyasamaj.org

(४) अस्तेय (चोरी न करना) :- किसी दूसरों के वस्तुओं या अधिकारों को छीनना स्तेय है तथा इसके विपरीत अस्तेय। स्तेय का अर्थ - चोरी करना, किसी के वस्तुओं को उससे बिना पूछे या उसकी बिना अनुमति के ग्रहण नहीं करना चाहिए। यह एक गर्हित अपराध है। **'मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।'** यजुर्वेद में यह उपदेश दिया गया है कि किसी के धन का अपहरण नहीं करना चाहिए। शास्त्रों में विभिन्न अपराधों के लिए विभिन्न दण्डों का विधान किया गया है। चौर्य वृत्ति का परित्याग करना व अपने ही धन पर संतुष्ट रहना मानवोचित गुण है।

(५) शौच (पवित्रता) :- तन स्वच्छ रहने पर किसी प्रकार के रोग आक्रमण नहीं कर सकते। मन स्वच्छ होने पर मानसिक रोगों से मुक्त होता है। स्वस्थ मन निर्मल शांत व स्थिर होता है। जिस प्रकार दर्पण स्वच्छ तथा स्थिर रहने पर उसमें प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। उसी प्रकार स्वच्छ और शांत मन से परमेश्वर का साक्षात्कार हो सकता है। ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग, नाद योग, अष्टांग योग आदि सभी साधनाएँ मन को पवित्र तथा एकाग्र करने के ही उपाय है।

अद्भि र्गात्राणि शुध्यन्ति, मन सत्येन शुध्यते।
विद्यातपोभ्याम्, भूतात्मा, बुद्धि र्ज्ञानेन शुध्यति॥

(मनुस्मृति) अर्थात् मिट्टी, तेल, साबुन आदि लगाकर स्वच्छ जल में नहाने से शरीर पवित्र होता है। सत्य वचन बोलने से मन, विद्या तथा तप से आत्मा तथा ज्ञान के द्वारा बुद्धि पवित्र होते हैं। अतः उपरोक्त उपायों से शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार को पवित्र करना मानवोचित गुणधर्म के अंतर्गत है।

(६) इन्द्रिय निग्रह (इन्द्रियों को वश में रखना) :- हमारे पांच ज्ञानेन्द्रियाँ यथा - नाक, कान, आँख, जिह्वा, त्वचा तथा पांच कर्मेन्द्रियाँ यथा-हाथ, पाँव, वाक्, पायु और उपस्थ है। ज्ञानेन्द्रियाँ शरीरस्थ आत्मा को गंध, शब्द, रुप, रस (स्वाद) तथा स्पर्श संबंधी ज्ञान प्रदान करती है। ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्रदत्त ज्ञान के अनुसार आत्मा कर्मेन्द्रियों के माध्यम से विभिन्न कर्म संपादन करती है। रुप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श, यथाक्रम आँख, जिह्वा, नाक, कान तथा त्वचा के विषय है। बोलना, चलना, काम करना, मल तथा मूत्र विसर्जन करना उसी प्रकार वाक्, पैर, हाथ, पैर, मल त्याग करने का इन्द्रिय तथा मूत्र त्याग करने का इन्द्रिय के विषय है। ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय को राजसिक तामसिक कार्यों से रोककर सात्विक कार्यों में लगाना इन्द्रिय निग्रह है। यह भी मानव का एक गुण है।

(७) धी (बुद्धि) :- ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा गृहीत बाह्य विषयों का जो निर्णय करता है उसे बुद्धि कहा जाता है। आँखे देखे गये विभिन्न प्रकार के वस्तुओं के आकार प्रकार और रंगों को ज्ञान-तन्तुओं के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुंचा देती है। उसी प्रकार ज्ञान तन्तुओं के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुंचा देते हैं। मस्तिष्क में स्थित बुद्धि उन सबका निर्णय करके तत् तत्संबंधी ज्ञान आत्मा को देती है। आत्मा उन सबको ग्रहण कर सुख-दुःख अनुभव करती है। कठोपनिषद् में आत्मा को रथी, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी, मन को लगाम, इन्द्रियों को रथ पर जोते गये घोड़ों तथा इन्द्रियों के विषयों को इन्द्रियों के गमन का मार्ग की उपमा दी गई है।

अगर बुद्धि रुपी सारथी कुशल है तो आत्मा बुद्धि रुपी सारथी के माध्यम से इन्द्रिय रुपी घोड़ों पर लगे मन रुपी लगाम अच्छी तरह से पकड़कर शरीर रुपी रथ को सुमार्ग पर चलाकर अपने लक्ष्य परमेश्वर तक पहुंच जाती है। नचेत् सांसारिक भोगों में उलझकर जन्म मृत्यु के चक्र में फँस जाती है। सद्बुद्धि, विवेक, ज्ञान के बल पर मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त करने में समर्थ होता है। अर्थात् बार-बार जन्म और मृत्यु से छूटकर मुक्ति जनित आनंद भोगता है।

(७) विद्या (जानने योग्य) :- जो पदार्थ जैसा है, उसे वैसा जानना विद्या कहलाती है। अर्थात् नित्य (चिर स्थायी) पदार्थ को नित्य, अनित्य (क्षण-भंगुर) पदार्थ को अनित्य जानना। सत् पदार्थ को सत् तथा असत् पदार्थ को असत् जानना। सुख तथा सुख के साधनों को सुख तथा सुख के साधन जानना। दुःख को दुःख के साधनों को दुःख के साधन जानना। पवित्र पदार्थ को पवित्र अपवित्र पदार्थ को अपवित्र जानना। जड़ को जड़ तथा चेतन को चेतन जानना। विद्या के द्वारा मनुष्य धन, ऐश्वर्य, मान, प्रतिष्ठा, उच्च पदवी आदि प्राप्त करने में समर्थ होता है। विद्या द्वारा परमेश्वर का साक्षात्कार होता है और परमेश्वर का साक्षात्कार होने पर मुक्ति जनित आनन्द की प्राप्ति होती है। आज अविद्या के कारण मानव का तन, धन, बुद्धि सब रोगाक्रान्त है। फलतः विभिन्न प्रकार के दुःख यातना, लांछना, यन्त्रणा आदि भोगने पड़ रहे हैं। आज हर मनुष्य तनावपूर्ण जीवन जी रहा है।

thearyasamaj.org

भौतिकवाद, आतंकवाद, भाषावाद, अलगाववाद पनप रहे हैं। चारों तरफ अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आध्यात्म विद्या के द्वारा इन सबका समाधान अवश्यम्भावी है। विद्या विहीन मनुष्य को शास्त्रों में पशु तुल्य माना गया है।

(९) सत्य :- इन्द्रियों के द्वारा अनुभूत तथ्यों को याथातथ्य रुपेण व्यक्त करने का नाम सत्य है। वैसे तो परमात्मा और जीवात्मा भी अविनश्वर व एक रस होने के कारण सत्य है। प्रकृति परिणामी होने पर भी अविनाशी होने के कारण सत्य के अन्तर्भुक्त है। परन्तु यहां प्रकरणानुसार सत्य की प्रथम के परिभाषा विषय में आलोकपात किया जायेगा। सभी शास्त्र एक स्वर से यह घोषणा करते हैं कि सत्य ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा परमात्मा के दर्शन किये जा सकते हैं। सत्यवादी हरिश्चन्द्र राजा, रघु, दशरथ, राम, महात्मा गांधी जैसे अनेक महान् विभृति जीवन में अनेक संकट, यातना, यंत्रणा, लाञ्छाना, प्रभूति, नाना दुःखों का सामना करने पर भी सत्यपथ पर अडिग रहकर प्रातः-स्मरणीय, चिर-वंध हो गये हैं।

(१०) अक्रोध :- क्रोध एक पाशविक प्रवृति है। यह एक ऐसी अग्नि है जो तन, मन, धन, मन, प्रतिष्ठा यश, बुद्धि आदि सबको जलाकर भस्मसात कर देता है। मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि क्रोध करने से मस्तिष्क के अनेक सूक्ष्म तन्तु जल जाते है। परिणाम स्वरुप मौत का शिकार होना पड़ता है।

क्रोधात् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशात बुद्धि नाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति॥
(गीता)

अर्थात् क्रोध करने से मोह उत्पन्न होता है। मोह से स्मृति नष्ट हो जाती है। स्मृति नष्ट होने पर बुद्धि नष्ट हो जाती है, बुद्धि नष्ट होने पर मानव अपनी श्रेमी से सदा के लिए पतित हो जाता है। क्रोधी व्यक्ति भला-बुरा, माननीय-अमाननीय भद्र व्यवहार आदि सब कुछ भूल जाता है। क्रोधी व्यक्ति और हिंम्र पशु में कुछ भी अन्तर नहीं है क्रोध न करने से चित हमेशा शान्त और स्थिर रहता है। अक्रोधी व्यक्ति के तन-मन बुद्धि चित्त आदि स्वस्थ सबल होते है। अक्रोध मानवीय गुणधर्म के अन्तर्गत आता है।

मनुष्य जन्म से न तो हिन्दू होता है, न मुसलमान, न सिक्ख, न पारसी और न यहूदी, जो जिस समाज में पैदा होता है, पलता और बढ़ता है वह उस समाज या सम्प्रदाय के संस्कार, रीति, नियम और परम्पराओं में ढल जाता है तथा अपने आपको हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, पारसी या यहूदी मानने लगता है। समान प्रसवात्मिका जातिः। (न्यायदर्शन) अर्थात् जन्मजात समान गुणधर्म वालों की समाष्टि एक जाति के अंतर्भुक्त होती है। अतः सम्पूर्ण मानव एक जाति के अंतर्भुक्त है। शारीरिक गठन की दृष्टि से मानव जाति की दो उपजाति है। स्त्री तथा पुरुष। ऋग्वेद में परमात्मा उपदेश देते हुए कहते हैं - **श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः धामानि भुवनानि तस्थु :।** अर्थात् हे समग्र विश्व के अमृत सन्तानों मेरी वाणी को ध्यान से सुनो। इस मंत्र में मनुष्य को उत्कृष्ट संस्कार गुणधर्म सम्पन्न होने के कारण अमृत संतान अर्थात् परमेश्वर का पुत्र कहा गया है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है - **"चातुवर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।"** गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर समग्र मानव समाज को चार भागों में बांटा गया है। ज्ञानी, धार्मिक, जिज्ञासु लोगों को ब्राह्मण, वीर, युद्ध विद्या में निपुण शासन के माध्यम से रक्षा करने में समर्थ साहसी लोगों को क्षत्रिय, कृषि, वाणिज्य, गो-पालन आदि के माध्यम से समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वालों को वैश्य उपरोक्त तीनों वर्णों की विभिन्न कार्यों के माध्यम से सेवा करने वालों को शूद्र माना गया है।

प्राचीनकाल में वर्ण विभाजन का आधार गुण, कर्म और स्वभाव था। अत्यन्त दुःख की बात है कि आजकल वर्ण निर्णय का आधार जन्मगत बन गया है। अर्थात् ब्राह्मण की संतान ब्राह्मण, क्षत्रिय की संतान क्षत्रिय, वैश्य की संतान वैश्य और शूद्र की संतान शूद्र कहलाती है। फलतः मानव-मानव में विभेद सृष्टि हो रही है।

मनु महाराज के मतानुसार उपरोक्त दशलक्षण जिनमें पाये जाते हैं वे सच्चे अर्थ में मानव है। उन्होने इन गुणधर्मों से विहीन मानव को मानव तनधारी पशु माना है। अस्तु शिक्षा क्षेत्र में ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे मानव सच्चे अर्थ में मानव बन सके! इतना ही नहीं बल्कि मानव से देव बन सके तथा उससे भी ऊपर उठाकर ब्रह्म का साक्षात्कार करके परमानन्द से परिपूर्ण मुक्ति लाभ कर सके। यह व्यवस्था शिक्षा क्षेत्र में अपरिहार्य है।

पता : *पता :- आर्य इलेक्ट्रानिक्स, बाजार रोड, मु. पो. पुसौर, जिला-रायगढ़ (छ.ग.) 496449*

thearyasamaj.org

महाप्रयाण – छ.ग. के आर्य नेता श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव (एक परिचय)

श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव का जन्म २ जनवरी १९४१ को कमालगंज जिला फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ था। आपके पिता का नाम (स्व.) श्री रघुवीर सहाय तथा माता का नाम (स्व.) श्रीमती सावित्रीदेवी था। आपकी शिक्षा पैतृक स्थान फर्रुखाबाद, फतेहगढ़ एवं कानपुर में विज्ञान स्नातक तक थी। धार्मिक संस्कार माता जी से प्राप्त हुए।

आर्यसमाज की ओर आप विद्यार्थी जीवन से ही, स्वामी विद्यानन्द विदेह, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री वीरेन्द्र शास्त्री लखनऊ, विश्व वेद परिषद अध्यक्ष, के प्रवचनों, भाषणों एवं सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से प्रेरित हुए।

आजीविका के सिलसिले में १९६२ में भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत हुए और १९९९ में प्रबन्धक (प्रचालन) पद से सेवानिवृत्त हुए।

भिलाई में आर्यसमाज की स्थापना के आरंभिक वर्षों में स्व. श्री जयदेव विरमानी एवं श्री रवि आर्य (इन्टुक अध्यक्ष, राष्ट्रीय नेता) की प्रेरणा पर आर्यसमाज भिलाई की सदस्यता सन् १९६३ में ग्रहण की और उपमंत्री का दायित्व सौंपा गया। तब से अद्यतन निरन्तर आर्यसमाज की बहुआयामी गतिविधियों से सक्रियतापूर्वक जुड़े हुए हैं। भिलाई में प्रारंभ में घर-घर में आर्य सभा लगा करती थी। १९६५ से १९७२ तक आर्यसमाज के निर्माण काल में मंत्री का दायित्व सम्हाला। इसी अवधि में यहां का भवन निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज भिलाई के प्रतिनिधि के रुप में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर में १९६६ से सम्मिलित होते रहे हैं। आर्यसमाज प्रतिनिधि सभा में निम्नांकित पदों का दायित्व संभालते रहे हैं :-

उपमंत्री - १९८६ से १९७३
मंत्री - १९७३ से १९७७ एवं १९७९ से १९८७
कोषाध्यक्ष - १९७८
प्रधान - १९८८ से १९९३
अन्तरंग सदस्य - १९९३ से

अधिष्ठाता ओम परिसर अद्यतन, आर्यसमाज भिलाई के निरन्तर अन्तरंग सदस्य। पदाधिकारी (प्रधान, उपप्रधान), सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तरंग सदस्य १९७३ से और उपप्रधान पद १९९२ से

शिक्षा के क्षेत्र में :- आर्यसमाज भिलाई में दयानन्द आर्य विद्या के संस्थापक अधिकारी एवं निरन्तर उन्नायक। दयानन्द शिक्षा समिति दुर्ग के उपमंत्री, मंत्री, उपप्रधान एवं प्रधान पदों पर पिछले ३० वर्षों से सहभागिता। घनश्यामसिंह आर्य कन्या महाविद्यालय दुर्ग के संस्थापक अधिकारी। दयानन्द आर्य विद्यालय, मठपारा एवं डी.ए.व्ही. मॉडल स्कूल आर्यनगर के संस्थापक। पदेन आर्य प्रतिनिधि सभाधिकारी (मंत्री/प्रधान) आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के मंत्री/प्रधान के कार्यकाल में प्रदेश में प्रचार कार्य एवं संगठन को नये आयाम दिये।

आपके कार्यकाल में आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती समारोह १९७४ रायपुर, गुरुकुल होशंगाबाद का हीरक जयन्ती समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सभा द्वारा सभा के शताब्दी समारोह नागपुर के प्रमुख संयोजक नियुक्त किये गये थे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन भी आयोजित हुआ, जिनमें आपने आर्यसमाज का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया, जो स्वीकृत हुआ। ऐतिहासिक समारोह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

प्रतिनिधि सभा की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए कृषि सम्पत्ति का उन्नयन एवं दुर्ग में ओमपरिसर का निर्माण किया गया, जिसमें सभा की सम्पत्ति की अन्याक्रान्ति से रक्षा से नियमित विपुल आय का साधन निर्मित हुआ।

अपने परिवार में आर्यसमाज की सुधारवादी प्रवृत्तियों को आत्मसात करने के लिए निरन्तर चेष्टारत रहे।

स्व. श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव जी के संबंध में

thearyasamaj.org

आर्यसमाज के इतिहास में लिखा है - वे स्वभाव से मधुर तथा मिलनसार है। उनकी स्वर्गीया पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी श्रीवास्तव आर्य कन्या महाविद्यालय दुर्ग में लेक्चरार थीं और प्रतिदिन पंच महायज्ञों का अनुष्ठान उत्साह के साथ किया करती थीं। आर्यसमाज के कार्य कलापों में वे अपने पतिदेव को उत्साह के साथ योगदान दिया करती थीं।

स्व. श्री श्रीवास्तव जी नई पीढ़ी के होश और जोश रखने वाले कार्यकर्ता थे। उन्होने प्रदेश के आर्यजगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया हुआ था। जहां कार्यकर्ता (संघटक) के रुप में अपना महत्व रखते थे, वहीं उनकी वक्तृत्व की शैली भी सुन्दर थी। आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा या साधारण सभा के समुचित संचालन में उन्हें दक्षता प्राप्त थी। बैठकों में किसी प्रकार की विवादास्पद या अशोभनीय स्थिति उत्पन्न होने पर सामंजस्य पूर्ण वातावरण बनाना उनके उल्लेखनीय गुण रहे। अपने वरिष्ठों को सम्मान देते हुए तथा कनिष्ठों को स्नेह एवं मार्गदर्शन देकर कार्य करना कराना यह उनके व्यक्तित्व का एक विशेष गुण थे।

अपने सुदीर्घ कार्यकाल में उन्होने जो सभा क्षेत्र का भ्रमण किया तथा कार्यकर्ताओं से संपर्क बनाय, उसका परिणाम था कि सभा की सारी गतिविधियाँ उनके ध्यान व नियंत्रण में रहती थी। चाहे भू-सम्पत्ति विभाग की गतिविधियां हो या दुर्ग में निर्माणाधीन आर्यनगर के क्रियाकलापों से वे पूर्णतः परिचित थे तथा आगे बढ़ाने के लिए क्रियाशील थे।

अपनी आजीविका के संबंध में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी रहे थे। इस कारण वे प्रबंधन की बारीकियों के ज्ञाता थे, सभा के कर्मचारियों से मधुर व्यवहार कर कार्य सम्पन्न कराते थे। श्री श्रीवास्तव जी नवयुवकों को प्रोत्साहित करते रहते थे, तथा आर्यवीर दल तथा आर्य समाजों को सक्रिय बनाने तथा उनकी गतिविधियों को तीव्र करने का ध्यान रखते थे।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी समारोह समिति के प्रधान संयोजक रहे। आपके संयोजन के कौशल से आयोजन सफलता की चरम सीमा को पहुंच सका।

विगत दि. १५ जून २०१४ को ७६ वर्ष की आयु में पञ्चतत्वों में विलीन हो गए। अपने पीछे पत्नी सहित दो बेटे एवं एक बेटी का भरापूरा परिवार छोड़ गए। छत्तीसगढ़ आर्य जगत् के लिए यह कभी पूरी न होने वाली क्षति है। छ.ग. के आर्यजन् यह समाचार जान सब आहते हैं। इस दुःख की बेला में शोक संतप्त परिजनों को कष्ट सहने की सामर्थ्य प्रदान करें, यही उस प्रभु से प्रार्थना है।

ज्ञानोदय : "करनी का फल"

- स्वामी कूटस्थानन्द

आपने जरुर कुछ ऐसा किया है या फिर कर रहे हैं, जिसके कारण आप दुखी हैं। परमात्मा कभी भूल नहीं करते। प्रकृति कभी गलती नहीं करती। तुम अपनी जिन्दगी को देखो, तुमने जो कुछ दिया है, वही मिल रहा है। तुमने जो कुछ बोया है, वही मिल रहा है। तुम भूल जाते है, बोते समय तुम सोचते हो बीज तो हमने बोये थे अमृत के और फल मिल रहे हैं विष के। किया तो था हमने भला और हो रहा है बुरा! दिये थे आशीर्वाद और मिल रही है गालियाँ। दिया था प्यार और मिल रही है फटकार। नहीं, यह संभव नहीं है। यहां इंच-इंच का हिसाब है, रत्ती-रत्ती का हिसाब है। तुमने जो किया है, वही मिल रहा है।

ईश्वर जो करते हैं वह आपके हित के लिए है, मगर धीरज रखो समय आने पर पता लगेगा।

सौजन्य : श्री नित्यानन्द वानप्रस्थी जी, रायगढ़

thearyasamaj.org

सबका मालिक एक : बनाम शंकराचार्य का बयान

सामयिक

- आचार्य डॉ. अजय आर्य

0 किसी भी व्यक्ति की पूजा नहीं होनी चाहिए।
0 ईश्वर अवतार नहीं लेता।
0 एक ही ईश्वर के अनेक नाम हैं।
0 धर्म का कारोबार देश के कोने-कोने में खड़ा होता है।
0 सांई को मानने से ज्यादा जरुरी है, सांई की बातों को मानना जरुरी है।

पिछले २३ जून से समाचार पत्रों में पूज्य शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी के बयानों की चर्चा हो रही है। इस बयान में शंकराचार्य जी ने सांई पूजा का विरोध किया है। स्वामी जी का बयान मुझे कुछ दृष्टि से एकांगी मालूम हो रहा है, इसलिए मैं अपनी कलम उठाने के लिए उद्यत हुआ हूँ। स्वामी जी ने कहा कि सांई ईश्वर नहीं है। इस बात में किसी की कोई दो राय नहीं हो सकती। इस बात पर तो स्वयं साई भी एक मत हैं, फिर बयान पर बवाल क्यों मचा हुआ है। सांई की उपलब्ध जीवनी के अध्ययन से पता चलता है कि वर्तमान द्वारिका माई में स्वयं सांई ही श्रीकृष्ण का मंदिर बनाना चाहते थे। इसका एक सीधा सा अर्थ यह है कि सांई भी आस्थावान थे राम और कृष्ण के प्रति उनकी भी श्रद्धा थी, जैसा कि आम लोगों में हैं।

शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी ने इस हेतु के लिए **"शिर्डी के सांई"** को ही उद्धृत किया है। सांई अपने पूरे जीवन काल में सतत एक ही उपदेश या सन्देश अपने भक्तों अथवा श्रद्धालुओं को देते रहे हैं - सबका मालिक एक। यह उपदेश वेद के सन्देश बहुत ही निकट है। वेद कहता है कि उस एक ईश्वर के अनेक नाम हैं। **स ओतः प्रोतश्च विभुः** वह ईश्वर संसार में ओतप्रोत है। **एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति** - उस एक ईश्वर को विद्वान लोग अनेक नामों से जानते या पुकारते हैं। शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी ने स्वयं इसकी व्याख्या करते हुए सवाल किया है कि सबका मालिक एक। इसका अर्थ है कि सबका ईश्वर अथवा स्वामी एक ही है। सनातन परम्परा की सहिष्णुता के पीछे यही एक मूल भावना है - हम यह मानते हैं कि हम सबकी राह अलग-अलग हो सकती है किन्तु हमारा गंतव्य एक ही है। **नृणामेको गम्यः**। उन्होने पूछा है कि सबका मालिक एक कहने से जो सब शब्द का उच्चारण होता है, उसका अर्थ क्या है ? क्या इस सबमें सांई सम्मिलित नहीं है। सिद्ध संतों की बातें बहुधा साधारण बुद्धि से समझ नहीं आती। राम और कृष्ण सहित सभी आराध्य (शंकराचार्य अवतारों में गिनते हैं) उस एक ईश्वर की आराधना करते रहे हैं। स्वामी जी ने यह भी सवाल किया है कि सांई को मुसलमान नहीं मानते इसलिए हिन्दुओं को भी नहीं मानना चाहिए। यह तर्क तो बड़ा खोखला है क्योंकि शंकराचार्य जिस गद्दी पर बैठे हैं, उनके संस्थापक शंकराचार्य आद्यगुरु शंकराचार्य कहे जाते हैं। आदि गुरु का अर्थ है पहला गुरु। क्या शंकराचार्य जी ने बिना गुरु के ही ज्ञान प्राप्त कर लिया था ? अगर उनके गुरु थे तो शंकराचार्य को आदि गुरु कहकर कैसे संबोधित किया जा सकता है ? शंकराचार्य जी को जगद्गुरु भी कहा जाता है. क्या जगद्गुरु का अर्थ होता है - जगत का गुरु। क्या सचमुच शंकराचार्य जगत के गुरु हैं। क्या उन्हें मुस्लिम, पारसी, बौद्ध अथवा आर्यसमाजी अपना गुरु मानते हैं। हिन्दुओं के सर्वोच्च गुरु होने के बाद भी राधा स्वामी, कबीरपंथ जैसे अनेक सम्प्रदायों, विचारों अथवा गुरुओं को मानने वाले शंकराचार्य को अपना गुरु नहीं मानते। क्या ऐसे में यह जगद्गुरु शब्द झूठा साबित नहीं होता। अगर शंकराचार्य सचमुच देश या समाज को राह दिखाना चाहते हैं तो उन्हें जगद्गुरु और आद्यगुरु इन दोनों शब्दों के विरुद्ध एक जनमत तैयार करना चाहिए। इस प्रसंग में मैं माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की प्रशंसा करना चाहूंगा जिन्होने महामहिम जैसे महिमामंडित

thearyasamaj.org

करने वाले विशेषण को तिलांजलि दी।

शंकराचार्य जी का यह सवाल भी तर्क की कसौटी पर खरा नहीं उतरता कि सांई अवतार या गुरु नहीं है इसलिए उनकी पूजा नहीं करनी चाहिए। आप जिन चौबीस अवतारों को मानते है, उनमें बुद्ध की भी गणना होती है। बुद्ध को नास्तिक कहा जाता है क्योंकि उन्होने ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार किया था, इसी दृष्टि के कारण बौद्ध तथा जैन दर्शन को नास्तिक दर्शन के रुप में जाना जाता है। यहां सवाल यह उठता है कि हमें अवतारों की पूजा करनी चाहिए या उनके बताए मार्गों पर चलना चाहिए। अगर उनके बताए मार्गों पर चलना चाहिए तो क्या बुद्ध की बातों का अनुसरण करके सबको नास्तिक नहीं हो जाना चाहिए। अगर बुद्ध अवतार हैं तो वे ईश्वर के अवतार है। क्या ईश्वरीय सत्ता की बात नहीं माननी चाहिए ? आपके तमाम सनातन ग्रन्थ ईश्वर को 'अजन्मा' मानते हैं। वेद, उपनिषद् में इसीलिए ईश्वर को 'अज' कहकर पुकारा गया है। 'अज' अर्थात् जिसका जन्म नहीं होता। हम जिसे मान लें, वह अवतार तुम जिसे मानो वह अवतार नहीं - इस स्वार्थभरे छंटन के सहारे कभी भी ईश्वरीय सत्य के निकट नहीं पहुंचा जा सकता। अवतारवाद ने ही अन्धविश्वास तथा व्यक्तिगत पूजा को बढ़ावा दिया है।

आप कहते हैं कि सांई मांसाहारी थे इसलिए उनकी पूजा नहीं की जानी चाहिए, आप जिस संत परम्परा को स्वीकार करते हैं क्या उस परम्परा में **अघोरी-संतो** को मान्यता नहीं दी जाती ? शायद पाठक अघोरी साधना या परम्परा से परिचित नहीं होंगे, इसलिए इसे स्पष्ट करना जरुरी होगा। अघोरी संतो की साधना बहुत ही कठिन होती है। इन साधकों के लिए कुछ भी अस्वीकार्य नहीं होता। वे सृष्टि के प्रत्येक तत्व में एक ही तत्व को देखने के अभ्यासी होते हैं। उनके संबंध में कहा जाता है कि वे श्मशान में साधना करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर मुर्दों को भी खा जाते हैं। ये मल-मूत्र को भी स्वीकार कर लेते हैं। साधारणतः ऐसे संत बहुत ही दुर्लभ होते हैं। इसीलिए कुछ लोग इनकी मान्यता का लाभ उठाने के लिए स्वयं को अघोरी सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। मुझे ब्रह्मानन्द आश्रम में पूज्य स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज ने एक संस्मरण सुनाया था कि गुरु ब्रह्मानन्द जी अपने शिष्यों के साथ बैठे थे तब एक संत ने आकर अपना परिचय अघोरी के रुप में दिया। गुरुजी ने स्वामी जी को बड़े ही आदर से बिठाया और भोजन का आदेश दिया। अपने सेवकों को उन्होंने कहा कि भोजन की थाली में थोड़ा मल भी परोसा जो बहुत दिनों में कोई अघोरी मिला है। गुरुजी के निर्देश के अनुसार भोजन की थाली परोसी गई। स्वामी जी थाली देखकर ही घबरा गए। गुरुजी स साधु का हाव-भाव देखकर ही समझ गए थे कि यह अघोरी नहीं है। जब साधु ने माफी मांगी तब गुरुजी ने उन्हें छोड़ा। सचमुच हमारी धार्मिक भावना का लाभ उठाने के लिए कुछ लोग सिद्ध संत होने का नाटक करते हैं।

मैं शंकराचार्य की बातों से सहमत न होता हुआ भी उनकी बातों को व्यापक रुप देना चाहता हूँ। व्यक्ति पूजा के इस बाजार में कृपा का एक बड़ा बाजार खड़ा किया गया है। मेरा बड़ी विनम्रता से यह सवाल है कि शिर्डी के सांई ही क्यों? क्या किसी भी व्यक्ति की पूजा होनी चाहिए ? जब शंकराचार्य संतों की बड़े घरानों में धनाढ्य स्त्री-पुरुष पूजा करते हैं तब कोई सवाल नहीं उठता। क्या शंकराचार्य या कोई भी संत पूजा का अधिकारी है ? ईश्वर की पूजा की जानी चाहिए या व्यक्ति या गुरु की। कुछ लोग गुरु की पूजा के लिए इस दोहे का सहारा लेते हैं -

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताय॥

दोहे में कहा गया है कि गुरु और गोविन्द दोनों साथ-साथ खड़े हैं। मैं किसको प्रणाम करूं। गुरु ने ही गोविन्द की जानकारी दी है, इसलिए गुरु गोविन्द अथवा ईश्वर से बड़े हैं। मुझे लगता है कि यह तर्क करीब-करीब ऐसा है, जैसे कोई मंजिल में पहुंचने की बजाय माईल स्टोन की ही पूजा करने लग जाए। किसी मंदिर का मार्ग बताने के लिए मार्ग सूचक बोर्ड या फिर माईल स्टोन लगा हुआ और व्यक्ति उस पत्थर की ही पूजा करने लग जाए। इसे बुद्धिमता तो नहीं कहा जा सकता। धर्म का मार्ग बुद्धि को तिलांजलि देना नहीं, बुद्धि का विशिष्ट उपयोग करना है। मुजे स्मरण आता है कि एक प्रसिद्ध योग गुरु संत रायपुर आये हुए थे। आर्यसमाजी पृष्ठभूमि के कारण वे भी व्यक्तिपूजा के विरोधी

thearyasamaj.org

रहे हैं। उनके स्वागत में हम मंत्रपाठ और शंखनाद कर रहे थे। मैंने देखा कि कुछ माताओं ने स्वामी जी के आरती उतारी। स्वामी जी ने किसी को भी नहीं टोका। सचमुच जब अपनी प्रतिष्ठा या पूजा होती है तब झूठ या पाखण्ड भी प्यारा लगने लगता है। कबीर ने सही ही कहा है - **पर उपदेश कुशल बहुतेरे।**

सांई का सम्मान या उनकी पूजा एक गुरु के रुप में हो तो कोई हर्ज नहीं है। शंकराचार्य जी कहते हैं कि सांई गुरु भी नहीं है। कौन गुरु है और कौन नहीं क्या इस बात का प्रमाणपत्र जारी करने का अधिकार है आपको ? मेरा सभी सांई भक्तों से विनम्र अनुरोध है कि सांई को मानने से ज्यादा जरुरी है सांई की बातों को, उनके उपदेशों को मानना। चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करनी ज्यादा जरुरी है। पूजा का अर्थ यही नहीं है कि आप काकड़ आरती करें, शिरडी जाएं। सांई की सच्ची भक्ति सांई के उपदेशों को मानने में है। अगर मैं स्वामी दयानन्द का अनुयायी या भक्त हूं तो मुझे किसी न किसी अंश में स्वामी दयानन्द के विचारों और उपदेशों से स्वयं को जोड़ना होगा। उनका अनुगमन किये बगैर मैं उनका अनुयायी या भक्त नहीं बन सकता। अगरबत्ती घुमाना बहुत आसान है। किसी विचार विशेष के अनुसार जीवन को घुमाना बहुत ही कठिन है। हमने कभी सोचा ही नहीं है कि परिक्रमा का अर्थ क्या है ? मंदिर आदि अनेक देव स्थानों में पूजा के बाद परिक्रमा का विधान किया जाता है। मैं एक रोटरी क्लब में सभा को संबोधित कर रहा था। वह सभा तो वैसे क्लब के सदस्यों के लिए ही था किन्तु उसमें कुछ आर्यसमाजी मित्र भी आये हुए थे। मुझसे किसी ने पूछा कि परिक्रमा वैदिक है या अवैदिक ? मैने कहा - वैदिक। वे बड़े नाराज हुए और कहने लगे प्रमाणित करो। मैने उन्हें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की संस्कार विधि का वह प्रसंग याद दिलाया, जहां उपनयन संस्कार के प्रसंग में गुरु की परिक्रमा का विधान किया गया है। परिक्रमा संकल्प का एक रुप है। गुरुमंत्र लेकर शिष्य जब गुरु की परिक्रमा करता है, उसे अपने जीवन का केन्द्र बिन्दु स्वीकार करते हैं। परिक्रमा सिर्फ परिक्रमा है तो फिर उससे किसी का भला नहीं हो सकता।

शंकराचार्य जी ने मिलावट की बात की है। यह तर्क भी उनके विरुद्ध जाता है। जब रामायण की बात आती है तब वाल्मिकी की रामायण को प्रमाण मानना चाहिए या तुलसीदास की रामायण का ? क्या तुलसी रामायण राम के उस स्वरुप से विपरीत नहीं है, जो वाल्मिकी ने अपने रामायण में लिखा है। जब कोई संत नामधारी व्यक्ति सलाखों के पीछे जाता है, तब ये ही लोग इस घटना को संतों के खिलाफ साजिश करने में थोड़ा भी समय नहीं लेते। अगर शंकराचार्य अपनी ही बात पर कायम हैं तो उन्हें अपने विचारों को व्यापक रुप प्रदान करना चाहिए। सांई के विरोध से ज्यादा अच्छा होता है कि वे अपने इन प्रगतिवादी विचारों को उस समाज के लोगों पर क्रियान्वित करें, जिस समाज से वे जाते हैं। क्या पुराणों ने कृष्ण के विशुद्ध स्वरुप में मिलावट नहीं की है।? वेद के विशुद्ध स्वरुप के विरुद्ध अथवा विपरीत खड़े ग्रन्थों के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाने की जिम्मेदारी भी तो शंकराचार्य जी की है। कुछ सांई भक्तों ने शंकराचार्य जी के खिलाफ उग्र प्रतिक्रिया दी है। एक भक्त ने यह भी कहा कि सांई ने कभी स्वयं को भगवान नहीं कहा। मैं इन भक्तों से इतना ही पूछना चाहता हूँ कि जो सांई कहते है, वह ज्यादा प्रमाणिक है या फिर उनके भक्त। जब सांई ने खुद को कभी ईश्वर नहीं कहा या माना तो क्या हम उन्हें ईश्वर कहकर उनकी बातों के विरुद्ध नहीं जा रहे हैं। **जिसने सांई की ही बात नहीं मानी वह भक्त समुदाय शंकराचार्य जी की भला क्या मानेगा ?** हमें सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत रहना चाहिए।

कुछ आर्यमित्र मेरे इस लेख को पढ़कर सोच सकते हैं कि मैं सांई के पक्ष में खड़ा हूँ किन्तु सच यह है कि मैं दोनों के ही पक्ष में नहीं हूँ। एकांगी करके पेश किये जा रहे सत्य के व्यापक स्वरुप को व्यापक रुप में प्रस्तुत किये जाने की आवश्यकता अनुभव करता हूं। अगर सांई की पूजा नहीं होनी चाहिए तो किसी भी गुरु या व्यक्ति की पूजा नहीं की जानी चाहिए। ईश्वर अजन्मा है। इसलिए किसी को अवतारी घोषित करना ईश्वर का अपमान करना है। टी.वी. में एक शंकराचार्य समर्थक किसी भक्त ने कहा कि शंकराचार्य सांई के खिलाफ नहीं है। सांई की आड़ में जो बाजार खड़ा किया

thearyasamaj.org

जा रहा है, उस बाजार के विरुद्ध है, स्वामी जी। मैं इस दृष्टि से भी विचार करना चाहता हूँ। मुझे देश का ऐसा कोई मंदिर नहीं मालूम जिसने बांजार खड़ा नहीं किया हो। सोमनाथ के मंदिर आस-पास जो मंदिर है वहां खुले आम एकतोले दूध में एक किलो पानी मिलाकर महादेव के अभिषेक के लिए बेचा जा रहा है। गंगा के तट पर गंगा जी की आरती का दो-चार रुपये की लागत का समान २१ रुपये से लेकर १०१ रुपये तक बेचा जा रहा है। मैने खुद कई बार शिर्डी की यात्रा की है। मुझे एक रोचक प्रसंग याद आता है कि एक बार मेरी धर्मपत्नी ने एक दुकान से चाय ली आठ रुपये उसका मूल्य था। अगले दिन सुबह फिर चाय पी। दुकान वाले ने दस रुपये मांगे। जब हमने बहस की तो बताया गया कि यहां प्रतिदिन अलग-अलग मूल्य होता है। सांई ट्रस्ट द्वारा एक रुपये में उपलब्ध कराये जाने वाली चाय इस चाय से कई गुनी ज्यादा स्वादिष्ट होती है। शनि सिंगनापुर जाने का वहां किराया शनिवार को सबसे महंगा होता है। किसी भी नियंत्रण के बाहर होने के कारण तथाकथित धर्म के बाजार में बेबस भक्त लुटने को मजबूर होता है। शिर्डी संस्थान पर उंगली उठाने से पहले अन्य ट्रस्टों को भी देखा जाना चाहिए। शिर्डी सांई संस्थान की व्यवस्था अत्यन्त श्लाघनीय है। वहीं पास में त्र्यम्बकेश्वर मंदिर की व्यवस्था के संबंध में शंकराचार्य को सोचना चाहिए। त्र्यम्बकेश्वर मंदिर में न तो भोजन की व्यवस्था है और न ही भक्तों के विश्राम की कोई व्यवस्था है। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की व्यवस्था को मैं दुनिया की सबसे बेहतरीन व्यवस्था कहता हूँ, जहां गरीब से गरीब व्यक्ति भी कुछ दिन चिंता मुक्त होकर बीता सकता है। इसी मंदिर से प्रेरित होकर दुर्ग्याणा मंदिर बनाया गया है। यहां पांव धोने की वैसी ही व्यवस्था है, जैसी स्वर्णमंदिर में है। सरोवर भी बनाया गया है, किन्तु रखरखाव के अभाव में सब चौपट हो गया है। क्या शंकराचार्य ने इसकेलिए कभी कोई ठोस पहल की है। कुम्भ के नाम पर रातोरात कितना बड़ा बाजार खड़ा कर दिया जाता है। आज गंगा की सफाई को लेकर देश और दुनिया में बड़ी चिंता है। क्या गंगा की इस दुर्दशा के लिए हमारी धार्मिक मान्यता या परम्परा जिम्मेदार नहीं है ? गंगा की आरती, मृतक श्राद्ध, अस्थि प्रवाह, कुम्भ जैसे धार्मिक मेले गंगा जैसी प्राणदायिनी नदियां के जल को विष बना रहे हैं। शंकराचार्य जी की चिंता मुझे इस बात के लिए ज्यादा लगता है तेरी दुकान मेरी दुकान से बड़ी क्यों ? मैं तो शंकराचार्य जी से इतना ही कहूंगा कि जिनके घर शीशे के होते हैं, वे दूसरों के घरों में पत्थर नहीं फेंका करते। आप व्यक्ति पूजा और अन्धविश्वास के खिलाफ सच्चे अर्थों में एक बड़ा आन्दोलन खड़ा कीजिए। हम आपके साथ कदम धर कदम चलेंगे।

पता : जेड-१२, गणपति विहार, बोरसी चौक, दुर्ग (छ.ग.)

-: आवश्यक सूचना :-

अवगत हो कि सभा के अन्तरंग बैठक दिनांक 22-6-2014 को यह निर्णय लिया गया कि **आगामी वार्षिक साधारण सभा की बैठक तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय सभागार, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) में दिनांक 21 सिंतबर 2014 (रविवार)** को आहूत की गयी है, जिसमें आपके आर्यसमाज के मान्य प्रतिनिधिगण अनिवार्य रुप से उपस्थित रहेंगे।

ज्ञात हो कि बहुत कम आर्यसमाजों को छोड़कर, अधिकांश आर्यसमाजों से वर्ष 2013-14 का वार्षिक वृत्तांत एवं दशांश राशि, जो कि अप्रैल 2014 में प्राप्त हो जाना था, तीन माह व्यतीत हो जाने के बाद भी, आज दिनांक तक सभा कार्यालय दुर्ग में अप्राप्त है।

अतः जिन आर्यसमाजों ने नहीं भेजा है, दशांश राशि एवं अग्निदूत मासिक मुख-पत्र का वार्षिक शुल्क 100/- के साथ जमा करने की कृपा करें।

आर्यसमाज के नियम-उपनियम एवं सभा नियमावली अनुसार प्रत्येक आर्यसमाज के पास - सदस्यता रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर, साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति रजिस्टर, कैश बुक (आय-व्यय लेखा रजिस्टर) अनिवार्यतः अद्यतन करते हुए, रहना चाहिए, ताकि सभा पदाधिकारी के द्वारा आपके आर्यसमाज के निरीक्षण अवसर पर, उपलब्ध की जा सके।

सभा मंत्री, दीनानाथ वर्मा

thearyasamaj.org

माँ भारती का सच्चा सपूत: बालगंगाधर तिलक

जयन्ती २३ जुलाई

– आचार्य भगवानदेव चैतन्य

पुण्य स्मरण

यूँ तो भारत वर्ष के इतिहास में अनेकों महापुरूषों ने जन्मलिया है मगर उनमें से कुछ एक समाज की समूची धारा को ही बदलने की प्रतिभा और साहस रखते थे। बालगंगाधर तिलक जी ऐसे ही अद्भुत महापुरुषों में से एक थे। इनका **जन्म २३ जुलाई १८५६** को महाराष्ट्र के रत्नागिरि नामक स्थान के छोटे से गांव चिखलगांव में हुआ। इनके पिता गंगाधर रामचन्द्र तिलक साधारण से शिक्षक थे मगर वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। बचपन से ही पिता के संस्कारों का प्रभाव तिलक जी पर भी पड़ा। ये अपने जीवन से ही अद्भुत प्रतिभा के मालिक थे। ये अत्यधिक निडर तथा साहसिक प्रवृत्ति के थे। अन्याय और अत्याचार इन्हें बिल्कुल भी सहन नहीं होता था। यही कारण है कि एक बार जब इनके अध्यापक ने इन्हें अकारण दण्ड दिया तो इन्होंने उसका प्रतिरोध करते हुए कहा - **"जब मैंने अपराध ही नहीं किया तो मैं क्यों दण्ड पाऊँ।"** तिलक की इस निर्भीकता को देखकर अध्यापक न केवल दंग रह गया था बल्कि उन्हें इस बात का भी अहसास हो गया था कि वह बालक आगे चलकर अवश्य कोई महान कार्य करेगा। अपने दादा से जब ये नाना साहब, तात्या टोपे तथा महारानी झांसी आदि क्रांतिवीरों की गाथाएँ सुनते थे तो ये बहुत उत्तेजित हो जाया करते थे। मात्र चौदह वर्ष की आयु में ही आपका विवाह सत्याभामा जी के साथ कर दिया गया था। उन्होने १८७६ में बी.ए. तथा सन् १८७९ में एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कानून स्नातक होने के बाद इन्होने अपनी प्रतिभा के चमत्कार दिखाना आरंभ किए। इन्होंने पूना के न्यू इंगलिश स्कूल, डक्कन एजूकेशन सोसायटी तथा फर्ग्यूसन कालेज की व्यवस्था अपने हाथों में लेकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। आगे चलकर इन्होंने ही कांग्रेस में कुछ जुझारूपन पैदा किया अन्यथा उनसे पूर्व स्वतंत्रता की मांग मानों एक औपचारिकता भर ही थी। उस मांग में अधिकार के स्थान पर गिड़गिड़ाहट और किसी याचक जैसी प्रवृत्ति लगती थी। इसके विपरीत उन्होने अपने पत्र 'केसरी' में लिखा - 'भारत में अंग्रेजी नौकरशाही से अनुनय विनय करके हम कुछ नहीं पा सकते। ऐसे प्रयास करते रहना तो पत्थर पर सिर टकराने के समान है।' इसलिए उन्होने साफ शब्दों में कहा - **"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे।"** उस समय इस प्रकार की सिंह गर्जना करने वाले वे एकमात्र महापुरुष थे। उनके इस उद्घोष से स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में लोगों में एक नए जोश खरोश की भावना पैदा हुई। उनकी इस प्रखरता के कारण उन्हें कुछ लोगों ने एक्टीमिस्ट तक की संज्ञा दी मगर यह एक ध्रुव सत्य है कि उनके साहसिक व्यक्तित्व के कारण ही गर्म दल का उदय हुआ। बाल, लाल और पाल की तिकड़ी ने क्रांति की मशाल को प्रखरता के साथ प्रज्वलित किया। इन्हीं के सक्रिय प्रयासों से ही भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी। भारत के लोगों के जनमानस में स्वतंत्रता की ललक पैदा करने के लिए इन्होने 'केसरी' तथा अंगेजी 'मराठा' नामक पत्र निकाले। इनके सम्पादकीय वास्तव में ही जनमानस को उद्वेलित करने वाले होते थे। तिलक जी के इन प्रयासों से सरकार तिलमिला उठी तथा इनके विरुद्ध अशान्ति पैदा करने, कानून भंग करने और जनता को भड़काने के आरोप लगाकर इन्हें डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया। लाल, बाल पाल की टोली उस समय क्रांति के पर्याय माने जाते थे। यदि भारत को तिलक जी का व्यक्तित्व न मिलता तो संभवतः इतनी जल्दी स्वतंत्रता का सपना साकार न हो पाता। तिलक के अनुसार स्वराज्य प्राप्ति के अधिकार की भावना उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से मिली। महर्षि जी की इस भावना को व्यवहारिक रूप देने के लिए ये जिस समर्पण तथा प्रखरता के

thearyasamaj.org

साथ कार्यक्षेत्र में उतरे वह अपने आप में एक मिसाल ही है। स्वराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार घोषित करके उन्होंने नवयुवकों के रक्त में एक नया संस्कार पैदा कर दिया जो निरन्तर उग्रता धारण करता चला गया। उनके व्यक्तित्व से प्रेरित होकर कितने ही युवक भारत माता की बलिदेवी पर अपना सर्वस्व आहुत करने के लिए अग्रसर हो गए। उनके व्यक्तित्व की इस प्रखरता ने ही उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमर कर दिया। सन् १८९७ में तिलक जी मुम्बई विधान परिषद के सदस्य चुने गये और उन्होंने बहुत ही निडरतापूर्वक सरकार के कार्यकलापों की आलोचना की। भारतीय जनमानस को संगठित करने के लिए उन्होने महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की परम्परा चलाई जो आज भी प्रचलित है। इसी बीच महाराष्ट्र में अकाल तथा पूना में प्लेग से पीड़ित आम जनता की उपेक्षा के भाव को देखते हुए दो युवकों ने पूना के प्लेग कमिश्नर रैड तथा एक और अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। तिलक जी का इस हत्या से हालांकि कोई सम्बन्ध नहीं था मगर अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा १८ महीने का कठोर कारावास दे दिया। इसके बाद सन् १९०८ में सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा बनाकर माण्डले जेल भेज दिया। उस समय उनकी आयु ५२ वर्ष की थी। जून १९१४ को इन्हें कालापानी से रिहा किया गया। इस दौरान ही इनकी धर्मपत्नी सत्यभामा जी का भी निधन हो गया। उस समय तिलक जी ने मार्मिक शब्दों में कहा था कि वे देश की दुर्दशा पर इतने रो चुके हैं कि अपनी जीवन संगिनी की मृत्यु पर रोने के लिए उनके पास आंसू ही नहीं बचे हैं। तिलक जी सिद्धहस्त लेखक थे। कालापानी की कारावास में इनके द्वारा लिखी गई 'गीता रहस्य' अपने आप में अद्भुत ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त उन्होंने **'ओरियन'** और **'द आर्कटिक होम इन द वेदाज़'** की भी रचना की।

व्यक्ति के कर्म ही उसकी सच्ची पहचान हुआ करती है, बाहरी वेशभूषा या शारीरिक बनावट से नहीं। सेठ गोविन्ददास जी ने जब उन्हें सर्वप्रथम देखा तो उनके साधारण व्यक्तित्व के बारे में वे लिखते हैं- गेहूंआ, रंग, न ठिगना और न ऊंचा तथा न दुबला और न मोटा शरीर, देखने में जरा भी आकर्षक नहीं। सिर पर मराठी पगड़ी, ऊपर के शरीर पर मराठी ढंग का अंगरखा और उस पर दुपट्टा। अंगरखे के नीचे धोती और पैरों में मराठी ढंग के लाल चप्पल। जिस प्रकार सूरत सीरत अनाकर्षक उसी प्रकार वेशभूषा भी इस प्रकार के साधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति ने अपने ओजस्वी विचारों और शेरदिली के कारण जननायक के पद को सुशोभित किया। जननायक भी साधारण नहीं बल्कि विनोबा जी ने उन्हें अप्रतीम जननायक से सम्बोधित किया था। एक स्थान पर वे लिखते हैं तिलक के विषय में जब मैं कुछ कहने लगता हूँ तो मुंह से शब्द निकलना कठिन हो जाता है। गद्‌गद हो उठता हूँ। साधु सन्तों का नाम लेते ही मेरी जो स्थिति होती है, वही इस नाम से भी होती है। मानों उनके स्मरण में ही यह शक्ति संचित है। तिलक जातितः ब्राह्मण थे, लेकिन जो ब्राह्मण नहीं है, वे भी उनका स्मरण कर रहे हैं। तिलक महाराष्ट्र के मराठे थे लेकिन पंजाब के पंजाबी और बंगाल के बंगाली भी उन्हें पूज्य मानते हैं। हिन्दुस्तान तिलक का ब्राह्मणत्व और उनका मराठापन, सब कुछ भूल गया है। यह चमत्कार है... इसमें रहस्य है...इस रहस्य में तिलक का गुण तो है ही लेकिन हमारे पूर्वजों की कमाई का भी गुण है। जनता का एक गुण और तिलक का एक गुण, दोनों के प्रभाव से यह चमत्कार हुआ कि ब्राह्मण और महाराष्ट्रीय तिलक सारे भारत में सभी जातियों द्वारा पूजे जाते हैं ...उन्होने श्रीराम तथा महामुनि वशिष्ठ, शिवाजी आदि के साथ उनकी तुलना करते हुए कहा है कि अपने महान कृत्यों के कारण व्यक्ति अपने नाम को ऐसी सार्थकता प्रदान करता है कि दूसरों के लिए वह नाम प्रेरणा स्रोत बन जाता है। उनकी आस्था है कि सैकड़ों वर्षों के बाद भी तिलक का नाम ही पवित्र माना जाएगा...इतिहास के आकाश में उनका नाम तारे के समान चमकता रहेगा। राष्ट्र-धर्म व देश प्रेम के दिवाने माँ भारती के यशस्वी पुत्र लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की जयन्ती के पुण्य अवसर पर उनके श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धाजंलि अर्पित है। आज आवश्यकता है तिलक की तरह मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा की जिससे हम फिर से इस देश के नवनिर्माण में कुछ योगदान कर सके।

पता - ८१/एस-४, सुन्दरनगर, कालोनी, जिला-मंडी, हिमाचलप्रदेश

thearyasamaj.org

पुण्य स्मरण शहीदों का सरताज : चन्द्रशेखर आजाद

जयन्ती २३ जुलाई

- लोचन शास्त्री

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

भारत माँ को विदेशी सरकार की दासता की जंजीरों से मुक्त करने के लिए तथा देश में शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमारे राष्ट्र के अनेक क्रान्तिकारियों ने एक लम्बे समय तक सशस्त्र क्रान्तिकारी आंदोलन चलाया था। वे अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपना सर्वस्व न्योछावर कर जंगे- आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे और इन तमाम संघर्षों का उद्देश्य था - देश की आजादी। ये नौजवान अपने उद्देश्यों के प्रति इतने सजग और समर्पित थे कि किसी सरकार की यातना भी उन्हें अपने ध्येय से विचलित न कर सकी। वे फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए, गोलियों के शिकार हुए तथा दीर्घकाल तक जेलों में नारकीय यातनाएँ सहते रहे, तथापि टूटे नहीं, झुके नहीं। सर पर कफन बांधे बड़ी बहादुरी से ये लड़े और देश के लिए शहीद हो गए। देश की खातिर पहले कौन शहीद हो, वे इस बात के लिए अवश्य लड़ते थे। हर मुसीबत में अपने क्रान्तिकारी साथियों को बचाते हुए आगे बढ़कर मौत को ललकारने वाले इन क्रान्तिकारी शहीदों में एक लोकप्रिय नाम है - आत्मयाजी चन्द्रशेखर आजाद।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म **२३ जुलाई १९०६** तद्नुसार सावन सुदी दूज दिन सोमवार को मध्यप्रदेश में अलीराजपुर रियासत के भावरा ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम पं. सीताराम तिवारी और माता का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। आजाद का जन्म घोर विपन्नता के बीच हुआ था। आजाद के पितामह मूलतः कानपुर के निवासी थे। चपन से ही पढ़ने-लिखने के बजाय तीर-कमान या बन्दूक चलाने में आजाद की अत्याधिक रुचि थी। आजाद विद्या के केन्द्र काशी में पहुंच गये। वहां काशी विद्यापीठ में भर्ती हो गए और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। वहां रह कर 'लघुकौमुदी' और 'अमर कोष' रट लिए। पढ़ाई के अतिरिक्त उनमें राष्ट्रीय प्रेम भी जागृत होने लगा। आजाद पढ़ाई की अपेक्षा क्रान्तिकारी साहित्य और क्रान्तिकारी संगठन में सम्मिलित होने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहा करते थे। वास्तव में वे सोचते रहते थे - 'कोड़े खाकर अथवा महात्मा गांधी जी की जय बोलकर देश आजाद हो सकता है ? आजाद ने अब क्रान्ति पर कुछ सोचना समझना और पढ़ना आरम्भ कर दिया। उनके हृदय में तो देश के बन्धन काटने के लिए कुछ कर दिखाने की ज्वाला धधक रही थी, वे स्कूल की सीमा में अपने को कैसे कैद कर लेते ? वे पढ़ाई छोड़कर सशस्त्र क्रान्ति का आयोजन करने वाले किसी गुप्त क्रान्तिकारी संघ की खोज करने लगे। वे आगे चलकर भारतीय प्रजातन्त्र संघ के सदस्य और सेनापति बने।

इन्हीं दिनों महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन चला और इसका प्रभाव बनारस विद्यापीठ में पढ़ रहे छात्रों पर भी पड़ा। छात्रों ने जुलूस निकाला। झण्डा आजाद के हाथ में था। इसका परिणाम यह हुआ कि वे गिरफ्तार कर लिए गए और मजिस्ट्रेट ने १५ वर्षीय आजाद से पूछा - "तुम्हारा नाम"? - "आजाद"। "पिता का नाम" ? - "स्वाधीनता"। "घर"? - "जेल"।

चन्द्रशेखर आजाद ने बैंत खाकर यह बता दिया कि देश की आजादी के लिए युवक बड़ी से बड़ी दारुण यातना भी हंसते-हंसते झेल सकते हैं। मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार जब जेल में आजाद की पीठ पर बैंत मारे गये थे तब उनके पीठ की खाल तक उड़ गई थी और पीठ का मांस दीखने लगा था। इतने पर भी आजाद के माथे पर जरा भी शिकन नहीं पड़ी थी। कोड़े के प्रत्येक प्रहार पर वे 'वंदेमातरम्', 'महात्मा गांधी की जय' - 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते रहे। उनके इस पराक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा घर-घर में होने लगी। लोग उन्हें श्रद्धा तथा आदर के भाव से देखते थे और उनके दर्शनों के लिए लालायित रहते थे। आजाद उस समय निर्भीकता और उत्साह के साथ कहा करते थे- **"मैं जीवन के अंतिम सांस तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ता रहूंगा।"** उनका लोकप्रिय नारा था- **दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे। आजाद ही रहे हम आजाद ही रहेंगे॥**

thearyasamaj.org

मन्थनात्मक ईश्वर की शिकायत

मेरे प्रिय,

सुबह तुम जैसे ही सो कर उठे, मैं तुम्हारे बिस्तर के पास ही खड़ा था। मुझे लगा कि तुम मुझसे कुछ बात करोगे। तुम कल या पिछले हफ्ते किसी बात या घटना के लिये मुझे धन्यवाद कहोगे। लेकिन तुम फटाफट चाय पी कर तैयार होने चले गए और मेरी तरफ देखा भी नहीं। फिर मैंने सोचा कि तुम स्नान करके मुझे याद करोगे। पर तुम इस उधेड़बुन में लग गये कि तुम्हें आज कौन से कपड़े पहनने हैं। फिर जब तुम जल्दी से नाश्ता कर रहे थे और अपने आफिस के कागज इक्कठे करने के लिये घर में इधर से उधर दौड़ रहे थे। तो भी मुझे लगा कि शायद अब तुम्हें मेरा ध्यान आयेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

फिर जब तुमने आफिस जाने के लिये ट्रेन पकड़ी तो मैं समझा कि इस खाली समय का उपयोग तुम मुझसे बातचीत करने में करोगे पर तुमने थोड़ी देर अखबार पढ़ा और फिर खेलने लग गए अपने मोबाइल में और मैं खड़ा का खड़ा ही रह गया। मैं तुम्हें बताना चाहता था कि दिन का कुछ हिस्सा मेरे साथ बिता कर तो देखो, तुम्हारे काम और भी अच्छी तरह से होने लगेंगे। लेकिन तुमने मुझसे बात ही नहीं की।

एक मौका ऐसा भी आया जब तुम बिलकुल खाली थे और कुर्सी पर १५ मिनट यूँ ही बैठे रहे, लेकिन तब भी तुम्हें मेरा ध्यान नहीं आया। दोपहर के खाने के साथ जब तुम इधर-उधर देख रहे थे, तो भी मुझे लगा कि खाना खाने से पहले तुम एक पल के लिये मेरे बारे में सोचोगे, लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ।

दिन का अब भी काफी समय बचा था। मुझे लगा कि इस बचे समय में हमारी बात हो जायेगी, लेकिन घर पहुंचने के बाद तुम रोजमर्रा के कामों में व्यस्त हो गये। जब काम निपट गये तो तुमने टी.वी. खोल लिया और घण्टों टी.वी. देखते रहे। देर रात थक कर तुम बिस्तर पर आ लेटे। तुमने अपनी पत्नी, बच्चों को शुभरात्रि कहा और चुपचाप चादर ओढ़कर सो गये।

मेरा बड़ा मन थाकि मैं भी तुम्हारी दिनचर्या का हिस्सा बनूँ... तुम्हारे साथ कुछ वक्त बिताऊँ... तुम्हारी कुछ सुनूँ... तुम्हें कुछ सुनाऊँ... कुछ मार्गदर्शन करूँ तुम्हारा !!! ताकि तुम्हें समझ आए कि तुम किसलिए इस धरती पर आए हो और किन कामों में उलझ गए हो, लेकिन तुम्हें समय ही नहीं मिला और मैं मन मार कर ही रह गया।

मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ !!! हर रोज मैं इस बात का इंतजार करता हूँ कि तुम मेरा ध्यान करोगे और अपनी छोटी खुशियों के लिए मेरा धन्यवाद करोगे। पर तुम तब ही आते हो जब जब तुम्हें कुछ चाहिए होता है। तुम जल्दी में आते हो और अपनी माँगे मेरे आगे रख के चले जाते हो और मजे की बात तो ये है कि इस प्रक्रिया में तुम मेरी तरफ देखते भी नहीं। ध्यान तुम्हारा उस समय भी लोगों की तरफ ही लगा रहता है और मैं इंतजार करता ही रह जाता हूँ।

....खैर कोई बात नहीं... हो सकता है कल तुम्हें मेरी याद आ जाये !!! ऐसा मुझे विश्वास है और मुझे तुम में आस्था है। आखिरकार मेरा दूसरा नाम आस्था और विश्वास ही तो है .... !!!

- तुम्हारा ईश्वर

सौजन्य : दिलीप आर्य, कार्यालय मंत्री,. छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

thearyasamaj.org

आरोग्य होमियोपैथी से मूत्र ग्रन्थियों (किडनी) से उत्पन्न रोगों का उपचार

– डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

होमियोपैथी के जन्मदाता डॉ. हैनीमेन के अनुसार रोगी के लक्षणों और औषधि के लक्षणों में समानता होना होमियो चिकित्सा का सर्वप्रथम सिद्धान्त है।

किडनी का कार्य – रुधिर (रक्त) विषैले पदार्थों को मूत्र द्वारा बाहर निकाल देने का कार्य मूत्र ग्रन्थियों का है, जिसे हम अंग्रेजी में किडनी कहते हैं, दोनों मूत्र ग्रन्थियों से दोनों ओर एक-एक नली निकलती है, जिसे मूत्र प्रणाली (यूरेटर) कहते हैं। किडनी जब रूधिर के दूषित तत्त्वों को छानकर मूत्र तैयार कर लेता है, तब यह मूत्र दोनों मूत्र प्रणालिकाओं (यूरेटर) द्वारा मूत्राशय (ब्लैडर) में चला जाता है, वहां से यह मूत्रमार्ग द्वारा बाहर निकल जाता है।

लक्षण : पेशाब में एल्बूमिल जाना, मूत्राशय की शोथ एवं जलन, मूत्र कृच्छता, पेशाब निकल जाना, पेशाब में खून आना, गुर्दे में पथरी, मूत्र ग्रन्थियों में रक्त संचय, किडनी का मूत्र निकालना बन्द कर देना, मूत्राशय केमरे होने पर भी मूत्र न निकाल सकना।

पेशाब के अन्त में घण्टों तीव्र जलन होना, पेशाब के रास्ते खून और पीब जाना, रुक-रुक कर बून्द-बून्द पेशाब होना रोगी दर्द से बैचेन हो जाता है। बायीं किडनी से कमर के बायें भाग से चलकर दर्द का नीचे की ओर पूरी टांग में तलुओं तक जाना, बुखार निरन्तर बने रहना, शरीर का वजन घटते जाना, नींद की कमी, गर्मी का सहन न होना।

एकान्त प्रिय चिड़चिड़ा स्वभाव उदास व निराश हाथ पैर गरम रहना, बैठकर पेशाब करने से मूत्र बूंद-बूंद आता है, खड़े होकर पेशाब करने से ठीक हो जाता है। पेशाब करने की तीव्र इच्छा, कठिनाई से आना, अपने आप निकल जाना, मूत्र मार्ग में संकोचन आदि। ऐसे लक्षणों के आधार पर होमियो चिकित्सक की सलाह लेकर चुनी हुई औषधि कुछ दिन धैर्यपूर्वक लेने से रोगी को रोग से छुटकारा मिल सकता है। ऐसे रोगियों को निराश होने की आवश्यकता नहीं है, होमियो औषधि रोग को जड़ से नष्ट करने की क्षमता रखती है।

प्रमुख औषधियाँ :-

१. टेरीबिन्थना – मूत्र ग्रन्थि में पेशाब भरे रहने के कारण भारीपन और दर्द अधिक मूत्र बंद होने पर यह औषधि अच्छा कार्य करती है ।

२. लाइकोपोडियम – मूत्र का मूत्राशय से न निकाल सकना पेशाब की हाजत तो होना परन्तु बूंद-बूंद पेशाब होना।

३. कैन्थरिस – मूत्राशय में अधिक मरोड़ दर्द जलन होने पर।

४. वेलाडोना – मूत्र ग्रन्थि में रक्त संचय होने के कारण असहनीय दर्द होने पर। इस प्रकार लक्षणों के आधार नक्स, सल्फर, मर्ककौर एपोसाइनम, कैमोमिला, आर्निका आदि औषधि लेने से रोगी को अत्यधिक लाभ मिल सकता है।

परहेज – औषधि लेने के ३० मिनट पहले व वाद में किसी भी चीज का सेवन नहीं करना चाहिए। मसाले वाली चीजें, उत्तेजक चीजें, प्याज, लहसुन, गरिष्ठ भोजन, शराब व मांसाहारी खाना वर्जित है।

पथ्य – हल्का भोजन (सुपाच्य) दूध, कच्चे, नारियल का पानी अधिक पीना चाहिए। होमियोपैथी चिकित्सा में अन्य चिकित्सा प्रणालियों से सर्वोच्च स्थान ग्रहण किया है, यही कारण है कि आने वाला भविष्य होमियोपैथी का है।

पता – त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबंध, रायपुर (छ.ग.)

thearyasamaj.org

प्रांतीय आर्यवीर दल छत्तीसगढ़ की कार्यकारिणी गठित

रायगढ़। छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्यवीर दल का गठन दिनांक १३ मई २०१४ को शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का गठन किया गया।

संरक्षक : आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान, छ.ग. प्रां. आ.प्रति. सभा), डॉ. रामकुमार पटेल (रायगढ़), श्री दयाराम वर्मा (रायपुर), श्री हरीश बंसल (दुर्ग), श्री रवि आर्य (भिलाई), श्री सुधीर गुप्ता (बिलासपुर), डॉ. वेदव्रत आर्य (सक्ती), श्री बजरंग मुनि जी (बलरामपुर)।

प्रांतीय संचालक : श्री जनकराम आर्य (रायगढ़), **प्रांतीय सहायक संचालक** श्री कपिलदेव जी (रायगढ़), **प्रांतीय उपसंचालक** श्री धरनीधर आर्य (सरगुजा), आचार्य कोमल जी (गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द), पं. उद्धव शास्त्री (भिलाई), **प्रांतीय महामंत्री** : श्री सुभाषचन्द्र शास्त्री (दमाऊधारा), **प्रांतीय कोषाध्यक्ष** श्री पंचमलाल आर्य (रायगढ़), **प्रांतीय बौद्धिकाध्यक्ष** डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री (सरिया), **प्रांतीय कार्यलय मंत्री** आचार्य कर्मवीर शास्त्री (दुर्ग), **प्रांतीय प्रचार मंत्री** श्री अशोकानन्द जी (सरगुजा), **प्रांतीय सह प्रचार मंत्री** श्री राजकुमार भल्ला (भिलाई), **प्रांतीय उपमंत्री** श्री महेन्द्र कुमार (दुर्ग), श्री नरेन्द्र आर्य (कोरबा), श्री फकीरमोहन आर्य (पुसल्दा), **प्रांतीय शारीरिक शिक्षाध्यक्ष** श्री जितेन्द्र पटनायक (लैलूंगा), **प्रांतीय स्वास्थ्य प्रमुख** डॉ. सुनील गुप्ता (लैलूंगा), **प्रांतीय सह बौद्धिक** आचार्य रणवीर आर्य (कांसा-डभरा), **प्रांतीय सेवा प्रमुख** श्री मोहन शास्त्री (सरगुजा)।

विशेष आमंत्रित सदस्य छ.ग. आर्यवीर दल :- सर्वश्री घनश्याम शास्त्री (कोरबा), मोहन शास्त्री (सरगुजा), लोकनाथ शास्त्री (दुर्ग), प्रेमप्रकाश शास्त्री (रायपुर), ताराकान्त आर्य (पलसापाली), धीरज आर्य (विश्रामपुर), संजय नेटी (सूरजपुर), कान्हूराम गुप्ता (लैलूंगा), सूरज आर्य (रायपुर), मेधाव्रत आर्य (गेरवानी), चूरामणी आर्य (विश्रामपुर), चन्द्रशेखर शास्त्री (रायगढ़), केदानरनाथ (रायगढ़), नारायण वेदालंकार (बरमकेला), ओमप्रकाश शास्त्री (अम्बिकापुर), राजेन्द्र जी (अम्बिकापुर), ईश्वरचन्द्र (टाटीबन्धं), सुशील पंडित (कटोरातालाब रायपुर), रामअवतार (पोंड़ी कवर्धा), डॉ. अजय आर्य (दुर्ग), चंदनसिंह ठाकुर (कोर्रा सरिया), मनहरण साहू (तागा), आचार्य रोहित शास्त्री (पेंडरा रोड), चन्द्रपाल नायक (रायगढ़)।

व्यायाम शिक्षकगण प्रान्तीय आर्यवीर दल छ.ग.-श्री शैल कुमार आर्य (प्रधान व्यायाम शिक्षक आर्यवीर दल), श्री मोहन आर्य (लैलूंगा), श्री मैकूलाल आर्य (महासमुन्द), श्री भुनेश्वर आर्य (रायगढ़), श्री नूतन आर्य (लैलूंगा), श्री फकीर मोहन (पुसल्दा), श्री दुखनासन (देलारी गेरवानी), श्री शेखर आर्य (आरंग), श्री बीरबल आर्य (दमाऊधारा), श्री देवप्रकाश (रायगढ़), श्री रुपेन्द्र आर्य (पुसल्दा), श्री मणिशंकर आर्य (तागा) को मनोनित किया गया है।

निज संवाददाता

प्रवेश प्रारम्भ : आर्य गुरुकुल एरवाकटरा (औरैया)

आर्य गुरुकुल एरवाकटरा (औरैया) उ.प्र. नवीन सत्र २०१४-१५ हेतु ब्रह्मचारियों का प्रवेश १५ मई से प्रारम्भ हो रहा है। विद्यालय उ.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त है। सात वर्षीय पाठ्यक्रम, परीक्षाएं सर्वत्र मान्य, वेद दर्शन, संस्कृत व्याकरण, साहित्य, हिन्दी, गणित कम्प्यूटर, अंग्रेजी, धनुर्वेद सहित सभी विषयों के पठन-पाठन की व्यवस्था, अनुशासन, स्वास्थ्य संरक्षण एवं चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान, सुन्दर स्वच्छ पर्यावरण, स्थान सीमित है। कृपया शीघ्रता करें। नोट : निर्धन परिवारों के योग्य मेधावी छात्रों को शुल्क में छूट का प्रावधान।

संपर्कसूत्र : आचार्य राजदेव शास्त्री, प्राधानाचार्य, चलभाष : ९४११२३९७४४

thearyasamaj.org

टूटी हुई परम्परा की पुनः शुरुआत :
दो सहोदर भाईयों का समावर्तन संस्कार

रोजड़ (गुजरात)। गुरुकुलीय काल में आचार्य के सान्निध्य में होने वाले संस्कारों में उपनयन व वेदारम्भ संस्कार अनेक बार देखने व सुनने में आता है। किन्तु समावर्तन संस्कार जो आचार्य के सान्निध्य में होने वाला अंतिम संस्कार है जो कि गुरुकुलीय शिक्षा के पूर्ण होने के बाद जब ब्रह्मचारी गृहस्थ जीवन में आना चाहता तब यह संस्कार होता है। सैकड़ों ब्रह्मचारी गुरुकुल से पढ़कर गृहस्थ जीवन में आ रहे हैं, लेकिन किसी का समावर्तन संस्कार देखने सुनने में नहीं आता। आधुनिक शिक्षा से प्रभावित होकर दीक्षान्त समारोह तो मनाते हैं, किन्तु ऋषि प्रणीत समावर्तन संस्कार नहीं करते। अस्सी वर्ष पूर्व पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी का यह संस्कार हुआ था। यह उनकी जीवनी पढ़ने से पता चला। तब से आज तक अपवाद रुप में एक दो का ही सुनने में आया।

प्रसन्नता की बात है कि टूटी हुई परम्परा की पुनः शुरुआत आचार्य रणवीर एवं आचार्य आत्मवीर जी से हुई है। वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में विक्रम संवत् आषाढ़ कृष्ण ३/२०७१ तदनुसार दिनांक १५ जून २०१४ दिन रविवार को प्रातःकाल सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री जी ने इस संस्कार को विधिपूर्वक सम्पन्न कराया। इस संस्कार में छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा आदि अनेक प्रान्तों से लगभग २५०लोग पधारे थे।

श्रद्धेय आचार्य ज्ञानेश्वर जी के सान्निध्य में ५ वर्ष रहकर आचार्य रणवीर जी ने दर्शनोपनिषदों का अध्ययन किया तथा श्रद्धेय आचार्य सत्यजित से आत्मवीर जी ने न्याय दर्शन का अध्ययन किया। ये दोनों आचार्य अपने शिष्यों के संस्कार के समय में उपस्थित रहे। संस्कार होने के बाद आचार्य ज्ञानेश्वर जी का आशीर्वचन प्राप्त हुआ। दोनों भाईयों ने विधि अनुसार गोदान के समय अपने-अपने आचार्यों को कृतज्ञतापूर्वक गौ हेतु पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये भेंट किए।

संस्कार के पूर्व रात्रि में आ. संदीप जी, आ. सत्येन्द्र जी, स्वामी सुखीनन्द जी, आ. सनतकुमार जी एवं डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री जी ने समावर्तन संस्कार के विषय में प्रकाश डाला तथा दोनों भाईयों को शुभकामनायें दी। आचार्य सनतकुमार जी ने दोनों भाईयों को अंतिम धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश करते हुए एक बहुत बड़ी कमी पर ध्यान दिलाया कि आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द जी से लेकर आज तक एक भी व्यक्ति शास्त्रानुसार अग्निहोत्री नहीं बन पाया। परिणाम स्वरुप हमें शास्त्र निर्दिष्ट दर्शपौर्णमास आदि यज्ञों को देखने के लिए दक्षिण भारत में पौराणिकों के बीच जाना पड़ता है। किन्तु वे यज्ञ के सभी क्रियाओं को निकटता से जाकर देखने नहीं देते, जैसा कि हम देखना चाहते हैं।

अतः हमारे आर्यसमाज में भी ऐसे व्यक्ति हो जो इन यज्ञों को करने वाले हों। आचार्य जी ने इस कार्य हेतु रणवीर जी पर विश्वास जताया था अग्निहोत्री बनने की प्रेरणा की। रणवीर जी ने भी आचार्य की बात को स्वीकारते हुए अग्निहोत्री बनने का संकल्प लिया।

स्वामी विवेकानन्द जी, आचार्य प्रदीप जी, स्वामी पुरुषोत्तमानन्द जी, आचार्य सनतकुमार जी, आचार्य सत्यजित जी आदि पूज्य गुरुओं से दोनों भाईयों ने शास्त्राध्ययन किया। संस्कार के समय स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी सुखानन्द जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य आनन्द प्रकाश जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, आचार्य संदीप जी, आचार्य सोमदेव जी आदि पूज्य विद्वानं ने अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

संवाददाता : आचार्य रणवीर शास्त्री, कांसा

बालक ब्रह्मचर्य व्रतधारें, धर्म कर्म भरपूर करें।
ब्रह्म-विवेक-प्रकाश पसारें, मोह महातम दूर करें॥
युक्ति प्रमाण-तर्क पटुता से, भ्रम को चकनाचूर करें।
पन्थ न पकड़े मतवालों के, साधु स्वभाव न क्रूर करें॥
सरल सुलक्षण संतानों को, संयमशील सुजान करो।
गुरुकुल पूजो वैदिक वीरो, विद्या बल धन दान करो॥

thearyasamaj.org

कन्हैया लाल आर्य जी को 'अध्यात्म रत्न' से सम्मानित

दिल्ली। पं. रामप्रसाद बिस्मिल जीके पावन जयन्ती के शुभ अवसर पर स्वास्ति महायज्ञ, विराट भजन, सन्ध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन देहली की सभी आर्य समाजों की ओर से बी ब्लाक जनकपुरी में किया गया।

इस समारोह में मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री जगदीश मुखी, दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री खुशीराम एवं मुख्य वक्ता भानगर (गुजरात) विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया थे। कार्यक्रम का संयोजन अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर ने किया। सभी वक्ताओं ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के अभूतपूर्व त्याग, बलिदान एवं देशभक्ति की भावना को स्मरण किया। इस अवसर पर गुड़गांव निवासी श्री कन्हैया लाल आर्य जी को उनकी अध्यात्म एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'अध्यात्म रत्न' से विभूषित किया गया। अध्यात्म पथ परिवार श्री आर्य जी को सम्मानित कर गौरवान्वित है।

संवाददाता : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, दिल्ली

वेद विदुषी आचार्या पुष्पावती को श्रद्धांजलि

वाराणसी। अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि वेद विदुषी आचार्या कु. पुष्पावती जी संस्थापिका/अध्यक्ष मातृ मन्दिर वाराणसी का गत २ मई १४ को निधन हो गया। दिनांक ३ मई को स्थानीय हरिश्चन्द्र घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त दि. ११ मई १४ को संस्था के प्रधान कार्यालय में शान्ति यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर आर्यजनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

विशेष आग्रह :- संस्था मातृ मन्दिर वाराणसी के पंजीकृत संविधान के अनुसार संस्थापिका डॉ. कु. पुष्पावती जी के आकस्मिक निधन के उपरान्त आर्यजनों की शिरोमणी संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली इस संस्था को अपने नियन्त्रण में ले लेगी एवं संस्था हित में सर्वविध निर्णय लेने का अधिकार भी सार्वदेशिक सभा को होगा।

अतः आपसे आग्रह है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा संस्था मातृ मन्दिर के अध्यक्ष पद पर नवनियुक्त किये जाने तक कृपया पत्र व्यवहार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर करने की कृपा करें।

संवाददाता : कृष्ण कुमार आर्य, मंत्री, मातृ मंदिर वाराणसी

विचार टी.वी. द्वारा निर्मित वैदिक कार्यक्रमों का प्रसारण

जैसे कि सभी आर्य बन्धु जानते हैं कि विचार टी.वी. द्वारा निर्मित वैदिक कार्यक्रमों का पिछले डेढ़ वर्ष से भी अधिक समय से साप्ताहिक प्रसारम आस्था चैनल पर प्रत्येक शनिवार रात्रि ९.३० बजे से एवं पिछले दस मास से दैनिक प्रसारण आस्था भजन चैनल पर हर रोज रात्रि ८.०० बजे से हो रहा है। इसी श्रृंखला में अब विचार द्वारा निर्मित सभी कार्यक्रम आस्था चैनल पर दैनिक रुप से हर रोज रात्रि ९.३० बजे से १०.०० बजे तक प्रसारित किए जायेंगे।

सभी आर्य बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि इसका लाभ लेवें एवं अपनी प्रतिक्रिया विचार को **info@vichar.tv** पर जरुर लिख भेजें।

दैनिक प्रसारण का विवरण

सोमवार - क्रियात्मक योगाभ्यास - आचार्य ज्ञानेश्वर जी
मंगलवार - ईशोपनिषद् - स्वामी विवेकानन्द जी
बुधवार - मधुर सम्बन्धों के स्वर्णिम सूत्र - आचार्य आशीष
गुरुवार - व्यक्तित्व विकास - डॉ. विनय विद्यालंकार
शुक्रवार - पातंजल योग दर्शन - आचार्य सत्यप्रकाश जी
शनिवार - सोलह संस्कार - डॉ. वागीश आचार्य
रविवार - दस्तावेजी चलचित्र (डाक्यूमेन्ट्री/लघु चलचित्र (शार्ट फिल्म)

इसकी अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु विचार की वेबसाईट **www.vichar.tv** पर अवश्य देखें।

thearyasamaj.org

गंगा दशहरा पर वेद प्रचार

मेरठ । गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ उ.प्र. के कुलाधिपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा से गंगा दशहरा का पावन पर्व प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ८ जून २०१४ को गुरुकुल परिसर में ही यज्ञ, भजन व प्रवचन के साथ हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में वेद तथा मानवता की रक्षा के लिए राजा भागीरथ के द्वारा किए गए अथक परिश्रम का उल्लेख किया। अनेक ऐतिहासिक साक्ष्यों के माध्यम से गंगा दशहरा पर्व की प्रासंगिकता व वर्तमान में उसकी उपादेयता पर प्रकाश डाला तथा भारतीय संस्कृति के प्रति गहन अनुराग व आस्था बनाए रखने के लिए सभी भक्तजनों एवं स्नातकों को प्रेरणास्पद उपदेश देते हुए शिखा सूत्र की महिमा को प्रतिष्ठापित किया। स्वामी जी ने वेद का मर्म उद्घाटित करते हुए स्वाभिमान व राष्ट्रीय भावना को मानवता का मूल मंत्र बताया। आर्य जगत् के पुरानी पीढ़ी के भजनोपदेशक पं. शोभाराम जी प्रेमी, श्री बेगराज जी, श्री जगतसिंग जी के सुमधुर भजन सुनने का सौभाग्य जनता-जर्नादन को प्राप्त हुआ। पूज्य स्वामी जी की अध्यक्षता में देश के कोने-कोने से पधारे स्नातकों का गुरुकुल की व्यवस्था पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। स्नातकों में डॉ. सोमदेव शतांशु, डॉ. श्रीवत्स शास्त्री, आचार्य वृहस्पति जी, कृष्णदेव शास्त्री, डॉ. शिवशंकर शास्त्री, धीरेन्द्र शास्त्री, प्रेमप्रकाश शास्त्री, पुरन्द्र शास्त्री, संतोष शास्त्री, डॉ. हरीश कुमार, विद्यासागर शास्त्री, भारत शास्त्री, हिमांशु शास्त्री, नरेन्द्र शास्त्री, डॉ. यशपाल शास्त्री, डॉ. योगेन्द्र भानु, डॉ. योगेन्द्र धामा, कुलदीप शास्त्री, ओमवीर शास्त्री, योगेन्द्र सिंह राणा आदि उपस्थित थे। स्नातक परिषद के संयोजक डॉ. यशपाल ने सभी का आभार प्रकट किया। ***संवाददाता : आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, रायपुर***

"मणि माता" नहीं रही

रायपुर । विगत २९-६-२०१४ को आर्यसमाज जवाहर नगर की समर्पित एवं निष्ठावती कार्यकर्त्री मणिमाता का ६८ वर्ष की आयु में शुक्रवार रात्रि में आकस्मिक देहावसान हो गया। शनिवार को विधि विधान सहित वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार संपन्न हो गया। वे अपने पीछे तीन बेटे एवं चार बेटियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई। म.प्र. एवं विदर्भ सभा की पूर्व प्रधान माता कौशल्या देवी जी के साथ ८० के दशक से जुड़ी थी। महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर को समृद्ध करने में बड़ी भूमिका निभाई। परिवार के अन्दर भी वैदिक संस्कारों को प्रसारित करने में तत्पर रहती थी। बहुत सेवाभावी एवं हँसमुख स्वभाव की थी। आपका जाना महिला आर्यसमाज के लिए अपूरणीय क्षति है। इस दुःख की घड़ी में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार शोक संतप्त परिजनों के साथ सम्मिलित हो प्रभु से प्रार्थना करते है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। **- सम्पादक**

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं.: 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

thearyasamaj.org

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी की जयन्ती के शुभअवसर पर दिल्ली में श्री कन्हैयालाल जी आर्य को 'अध्यात्म रत्न' से विभूषित किया गया। सम्मानित करते हुए मान्य अतिथिगण

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ में गंगा दशहरा के पावन पर्व पर उपस्थित पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती एवं स्नातक परिषद के सदस्यगण

हिन्दी मासिक मुख "अग्निदूत" मासिक पत्रिका के 10वें वर्ष में प्रवेश पर समस्त सुधी पाठकों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

हार्दिक शुभकामनायें.

thearyasamaj.org

जुलाई 2014

CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

प्रेषक :

अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य अंशुदेव जी सह ऋतम्भरा देवी के मंगल परिणय के शुभावसर पर छ.ग. के समस्त आर्यजनों की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ.

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.